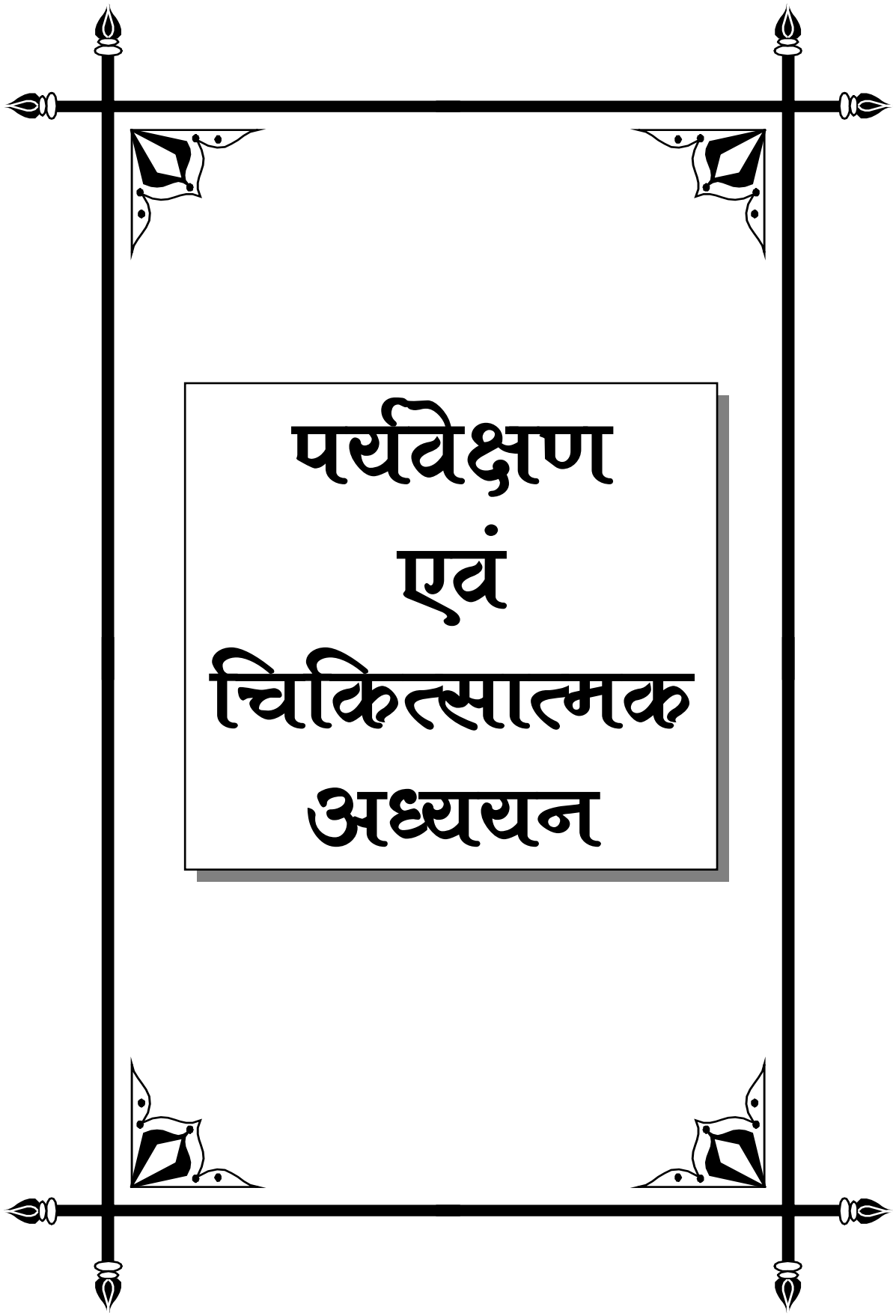

पर्यवेक्षण
एवं
चिकित्सात्मक
अध्ययन

पर्यवेक्षण एवं चिकित्सात्मक अध्ययन

''आमवात के रोगियों पर वृहत सैन्धवादि तैल की जानुवस्ति एवं क्षारवस्ति का चिकित्सकीय अध्ययन'' प्रस्तुत विषय के अध्ययन हेतु विशेष शोध पद्धति को अपनाया गया।

I) बस्ति द्रव्य निर्माण

II) बस्ति का आमवात व्याधि में चिकित्सकीय अध्ययन

वृहत सैन्धवादि तैल की जानुबस्ति - पीठ के बल लेटे रोगी की जानु संधि पर उडद के आटे की बनी हुई पीठी से एक रिंग बना दी गई। इस रिंग में गर्म सहने लायक स्थिति में वृहत सैन्धवादि तैल धीरे–धीरे डाला गया। एक समय में 40–45 मिनट तक जानु बस्ति की गई। आमवात से पीडित रोगियों में 15 दिन तक लगातार जानुबस्ति दी गई पश्चात 15 दिन का परिहार काल तथा पुनः 15 दिन तक जानुबस्ति दी गई। इस तरह कुल 45 दिन तक वृहत सैन्धवादि तैल की 30 जानुबस्ति दी गई।

क्षारबस्ति द्रव्य निर्माण :

संदर्भ आधार :

सैन्धवाक्षं समादाय शताह्वाक्षं तथैव च।
गोमूत्रस्य फलान्यष्टावम्लिकायाः पलद्वयम्।।
गुडस्य द्वे पले चैव सर्वमालोडय यत्नतः।
वस्त्रपूतं सुखोष्णं च बस्तिं दद्याद्विचक्षणः।। *चक्रदत्त* 73।29–30

मात्रा :

सैन्धव	–	१ कर्ष	–	1 तोले	–	10 ग्राम
शताह्वा (सौंफ)	–	१ कर्ष	–	1 तोले	–	10 ग्राम
इमली	–	2 पल	–	8 तोले	–	80 ग्राम
गुड	–	2 पल	–	8 तोले	–	80 ग्राम
गोमूत्र	–	8 पल	–	32 तोले	–	320 मि.ली.

इन सबको एकत्रित मिलाकर वस्त्र से छान अल्प गरम रुप बस्ति देने से शूल, आनाह, विबंध, मूत्रकृच्छ्र, कृमिरोग, उदावर्त, गुल्म तथा आमवात दूर होता है। क्षार बस्ति का प्रयोग भोजन करने के पश्चात करना उत्तम है। उपरोक्त फलश्रुति का आधार लेकर 'आमवात' रोगियों में 'क्षार बस्ति' दी गयी।

बस्ति मात्रा : चक्रदत्त में उद्धरित क्षारवस्ति का प्रयोग निरुह बस्ति के अधिकार में मिलता है। शास्त्र में निरुह बस्ति की मात्रा का प्रमाण अलग–अलग मिलता है।

चरक संहिता में निरुह बस्ति का परम प्रमाण १२ प्रसृति यथा ९६ तोले (९६0 मि.ली.) दिया है। शारंगधर एवं भावप्रकाश में निरुहबस्ति की मात्रा – उत्तम मात्रा १ १/४ प्रस्थ (८0 तोले), मध्यम मात्रा १ प्रस्थ (६४ तोले) और हीन मात्रा १ कुडव (३२ तोले) कहीं है।

निरुहत्य प्रमाणं तु प्रस्थः पादोत्तर मतं।

मध्यमं प्रस्थमुधिष्टं हीनं च कुडवं त्रयं।। शा.उ.खं. ६।३

यह युवा व्यक्ति के लिए उत्तम मात्रा समझनी चाहिए और तद्नुसार बालकों और वृध्दों में अपेक्षाकृत मात्रा निर्णय करना चाहिए। ऐसा उल्लेख मिलता है।

क्षारबस्ति की मात्रा चक्रदत्त के अनुसार ली गयी।

सैन्धव	–	1 तोले	–	10 ग्राम
शताह्वा	–	1 तोले	–	10 ग्राम
इमली	–	8 तोले	–	80 ग्राम
गुड	–	8 तोले	–	80 ग्राम
गोमूत्र	–	32 तोले	–	320 मि.ली.

यह मात्रा युवा व्यक्ति के लिए प्रयुक्त की गयी और तद्नुसार रुग्णों के वय और बलानुसार मात्रा निर्धारण किया गया।

बस्ति निर्माण :सर्वप्रथम 80 ग्राम इमली (बीजरहित) और 80 ग्राम गुड़ कोष्ण जल में भिगोकर वस्त्र से छान लिया गया। उसी में १0 ग्राम वस्त्र से छना सैंधव नमक और शताह्वा चूर्ण १0 ग्राम तथा 320 मि.ली. गोमूत्र मिलाकर बस्ति द्रव्य निर्माण किया गया।

पूर्वकर्म : बस्ति कर्म से पूर्व रुग्णों को विधिवत ३–५ दिन बाहय स्नेहन वृहत सैन्धवादि तैल से तथा नाडी स्वेदन दिया गया। बस्ति स्थान अर्थात कटि, नितम्ब, त्रिकास्थि व वंक्षण उर्ध्व प्रदेश पर कोमल अंगों (गर्भाशय, मूत्राशय और वृषण) को बचाकर स्वेदन किया गया।

एकल द्रव्य, क्वाथ, व्यापद दोषहर योग, बस्तियंत्र आदि उपकरण स्नेह द्रव्य आदि की व्यवस्था यथा समय हो सके एतदर्थ पूर्वकर्म में यह व्यवस्था की गयी।

स्थान की व्यवस्था :निर्वात स्थान पर शय्या की व्यवस्था करके बस्ति दी गयी।

रोगी व्यवस्था : बस्ति देने का दिन निश्चित करके एक दिन पूर्व संध्या को रुग्ण के कोष्ठ के अनुसार कोष्ठ शुध्दि के लिए विभिन्न द्रव्य दिये गये।

उदाहरण– मृदु कोष्ठ के लिए –कोष्ण दुग्ध के साथ मनुक्का,

मध्यम कोष्ठ के लिए –अमलतास गूदा और

क्रूर कोष्ठ के लिए –विरेचन पानक को दिया गया।

अगले दिन प्रातः कोष्ठ शुध्दि के लक्षण प्राप्त होने पर ही बस्ति प्रदान की गयी। जिन रुग्णों में कोष्ठ शुध्दि के लक्षण प्राप्त नहीं हुये, उन रुग्णों को उसी दिन शाम को कोष्ठ शुध्दि के लिए दूसरी मात्रा दी गयी। जिन रुग्णों में कोष्ठ शुध्दि हुयी है, उन्हीं रुग्णों को भोजन करने के बाद बस्ति दी गयी।

प्रधान कर्म : रोगी को वाम पार्श्व पर बायें करवट सिरहाना न देते हुए लेटाया गया। रुग्ण को अपने ही हाथ पर सिर रखकर बायां पैर सीधा रखकर और दाहिनां पांव जानु संधि से तथा वंक्षण संधि से संकुचित कर झुकाकर रखा गया। इस अवस्था में गुद, स्फिक्, श्रोणी का भाग ठीक तरह बस्ति दाता के सामने आता है। उससे बस्ति दाता को बस्ति द्रव्य भाग मलाशय एवं बृहदान्त्र के अन्तगर्त प्रविष्ठ करने में सुविधा होती है।

पूर्वकर्म की उचित व्यवस्था हो जाने पर रोगी को बस्ति शय्यापर लेटाने के बाद कटि, पृष्ठ, अधःभाग, त्रिकास्थि, नितम्ब, नाभि के नीचे वंक्षण प्रदेश पर कोमलांगों को बचाकर नाडी स्वेद से (दशमूल क्वाथ) स्वेदन किया गया। स्वेदन पश्चात गुद भाग का शोधन करके बस्तिनेत्र (Rubber Cathetor Plain No. 16) तिल तैल में लिप्त कर ४।। से

६।। इंच तक धीर–धीरे पृष्ठवंश के समांन्तर रखते हुये प्रविष्ठ किया गया। रबर की नली के दूसरे मुख को बस्तियंत्र से बस्ति द्रव्य कंपन रहित, न तेजी से एवं न शीघ्रता से प्रविष्ठ किया गया। बस्ति देते समय यह ध्यान में रखा गया कि वायु प्रवेश नहीं हो, इसलिए बस्ति द्रव्य प्रविष्ठ करते समय कुछ द्रव्य यंत्र में बचाकर रखा गया।

बस्ति द्रव्य प्रविष्ठ करते समय रुग्ण को श्वास अंदर खींचने को कहा गया। बस्ति द्रव्य प्रवेश के बाद नितम्ब प्रदेश को हल्के हाथों से १०–१५ बार थपथपाया गया।

बस्ति देने के बाद रबर की नलीका को सावधानी से तुरन्त निकाल लिया गया। फिर आधा से एक मिनट तक रुग्ण को वैसे ही स्थिति में लिटाकर रखा गया। बाद में रुग्ण को सीधा लेटाया गया और बस्ति प्रत्यगमन का निरीक्षण किया गया।

बस्ति प्रणिधान में सावधानी : बस्ति देते समय बस्ति बराबर जाती है या नहीं इसका निरीक्षण किया गया। कभी–कभी बस्ति नेत्र प्रवेश करते ही या कुछ द्रव्य प्रवेश होते ही वात–मल वेग की उत्तेजना होती है। इसलिए बस्ति देने के पूर्व मल और मूत्रवेगों का विर्सजन करने को कहा गया। यदि बस्ति प्रक्रिया में वेगप्रवर्तन हो तो बस्ति नेत्र को निकालकर मल विसर्जन करने के बाद बस्ति दी गयी। फिर श्रोणि के नीचे तकिया रखकर कटी–पक्वाशय को ऊपर उठ़ाकर बस्ति दी गयी, क्योंकि बस्ति अधिक समय तक अंदर रह सकेगी ऐसी व्यवस्था की गयी।

पश्चात कर्म :

बस्ति प्रत्यागमन एवं निरीक्षण : बस्ति के वापस आने का काल 'प्रत्यागमन काल' कहलाता है। निरुह बस्ति का प्रत्यागमन काल एक मुहुर्त (लगभग ४८ मिनट) का है। बस्ति देने के बाद बस्ति प्रत्यागमन तक का काल रोगी पत्रक पर अंकित किया गया। यदि एक मुहुर्त के बाद भी बस्ति प्रत्यागमन नहीं होती तो रुग्ण को –

१. तीक्ष्ण उष्ण औषधि से संयुक्त दूसरी बस्ति दी गयी या

२. फलवर्ति गुद में प्रविष्ट कराकर बस्ति तथा मलों का प्रत्यावर्तन किया गया।

३. श्रोणि, स्फिक्, वंक्षण, पक्वाशय पर गरम पानी की थैली से स्वेदन करवाया गया।

बस्ति प्रत्यागमन होने तक रोगी निरीक्षण किया गया।

पथ्यादि तथा उष्ण बस्ति विचार :

बस्ति प्रत्यागमन के बाद रुग्ण की सुखपूर्वक शय्या की व्यवस्था की गयी। रोगी के एड़ी, अंगुली एवं पिण्डलियों पर, वेदना स्थानों पर गरम पानी की थैली से स्वेदन किया गया। रुग्ण को निर्वात स्थान पर विश्राम करने को कहा गया। क्षारबस्ति भोजन के बाद देने के कारण रुग्ण को भूख लगने पर मूंगदाल का यूष दिया गया। बस्ति के सम्यक् योग लक्षण प्राप्त होने पर रुग्ण का वात, पित्त, कफ इन दोषों का बलाबल देखकर रात्रि के भोजन की व्यवस्था की गयी। निरुह से शोधन होता है, तथापि आमाशय और पक्वाशय में अत्याधिक क्षोभ नहीं होता। अतः अग्नि को देखकर मंद, तीक्ष्ण और समावस्था ध्यान में रखकर अल्पमात्रा युक्त भोजन या मध्यम भोजन दिया गया।

योगायोगाति लक्षणों का निरीक्षण : बस्ति के सम्यक् योग, अयोग और अतियोग के लक्षणों को देखकर ततद्वस्था में योग्य उपाय किय गये।

सम्यग् योग लक्षण : *नाभि प्रदेशं कटिपार्श्वं ..... यः स बस्तिः।। च.सि. १।४0*

जो बस्ति नाभि प्रदेश, कटि, पार्श्व, कुक्षि तक जाकर संपूर्ण मल को इकट्ठा कर मल को और शरीर को स्निग्ध कर दोषों के साथ सुखपूर्वक निकालती है वह सम्यग्दत्त बस्ति समझनी चाहिए। बस्ति से सम्यक् प्रकार से शोधन हो तो निम्नलिखित लक्षण उत्पन्न होते है।

1. प्रसृष्ट विट्कता 2. प्रसृष्ट मूत्रता 3. प्रसृष्ट वातता 4. क्रमशः मल पित्त कफ एवं वायु का विसर्जन 5. लाघ्वता 6. भोजन में रुचि 7. अग्नि में वृद्धि 8. आशयों में लघुता 9. रोगोपशमन 10. प्रकृतिस्थता

बस्त्युत्तर तुरन्त विचारणीय विषय :

स्वयमेव प्रवृत्ते तु ..... सुनिरुढता। अ.हृ.सू. १९।४१

रुक्षस्य ..... पश्चान्निरुहयेत्।। सु.चि. ३७।४४

निरुह के बाद पहले कहे गये अनुसार बस्ति प्रत्यागमन का निरीक्षण किया। कभी–कभी बस्ति तुरन्त वापस आती है, किन्तु सम्यक् लक्षण उत्पन्न नहीं करती। इस तरह यदि केवल निरुह द्रव्य ही निकल जाये तो पुनः तुरन्त दूसरी निरुह बस्ति देनी

चाहिए। इस तरह तीन या चार बस्तियाँ दी जा सकती है। बस्ति तुरन्त उसी समय दी जा सकती है, तथापि तीसरी, चौथी, पांचवी या अधिक बस्तियाँ देनी हो तो वे उसी दिन नहीं देना चाहिए अन्यथा पक्वाशय क्षोभ होगा।

सम्यक् निरुह लक्षण प्राप्त न हो तो प्रथम अनुवासन अथवा मात्रा बस्ति देकर फिर निरुहबस्ति देना चाहिए।

परिहार :

कालस्तु बस्त्यादिषु यति यावान् तावान् भवेद्धि परिहारकालः। **च.चि. १५।४**

जितने दिन तक बस्तियां दी जाती है, उससे दुगने दिन आगे पथ्य संभालना चाहिए। उतने कालतक अत्यासन, अस्थान में (सवारी इ.) में बैठना, जोर से बोलना, दिन में सोना, मैथुन, वेगावरोध, शीत जलपान, शीत जलस्नान, धूप में घूमना, ठंडी हवा में घूमना, क्रोध आदि को छोडना चाहिए और लघु और काल के अनुसार हितकर भोजन करना चाहिए।

कुल बस्तियाँ : कालबस्ति रुप में अनुवासन बस्ति (वृहत सैन्धवादि तैल) एवं निरुह बस्ति (क्षारबस्ति) प्रतिदिन 15 दिन तक दी गयी। 15 दिन पश्चात 15 दिन तक परिहार काल तथा पुनः 15 दिन कालबस्ति रुप से क्षार बस्ति दी गई। कुल 30 बस्तियॉ 45 दिनों तक दी गई।

बस्ति देय काल : शास्त्रों में निरुहबस्ति भोजन के बिना या प्रथम भोजन के जीर्ण होने के बाद दी जाती है, ऐसा उल्लेख मिलता है परन्तु शास्त्र में क्षारबस्ति का प्रयोग भोजन करने के बाद करना उत्तम माना है। इसलिए बस्ति का प्रयोग प्रातः भोजन करने के बाद किया गया।

चिकित्सात्मक अध्ययन

कार्यपद्धति :

अध्ययन हेतु विशेष आतुरालयीन रोगी पत्रक तैयार किया गया। लक्षणों के आधार पर रोगियों का चयन किया गया। जिसमें अधिकतर रोगियों का बाहय रोगी विभाग में अध्ययन एवं चिकित्सा कार्य आवश्यकतानुसार किया गया।

बाहय रोगी विभाग के रोगियों को आहार परामर्श एवं आवश्यकतानुसार लंघन करने की सलाह दी गयी। अंतः प्रवेश रोगी विभाग के रोगियों को चिकित्सालय में बनने वाले आहार पर आवश्यकतानुसार मात्रा पर रखा गया एवं आवश्यकतानुसार लंघन (उपवास, लघु अन्न) भी दिया गया।

स्वयं रोगी द्वारा कथित लक्षण एवं चिकित्सीय आकलन द्वारा निरीक्षण का प्रयोग कर रोगीपत्रक परिपूर्ण किया गया। रोगी परीक्षा पत्रक में लिखित अष्टविध परीक्षण, उरः परीक्षण, अग्नि परीक्षण, कोष्ठ परीक्षण एवं प्रकृति परीक्षण किया गया।

अष्टविध परीक्षा के अंतर्गत नाडी परीक्षा में नाडी गति का परीक्षण, मूत्र परीक्षण में मूत्रप्रवृत्ति के बारे में और मूत्र प्रवृत्ति के समय दाह आदि के विषय में पूछा गया। मल परीक्षा में मलबद्धता, अतिप्रवृत्ति, साम–निरामता, द्रवमल प्रवृत्ति के विषय में परीक्षण किया गया तथा पुरीष प्रवृत्ति के आधार पर कोष्ठ निश्चिती भी की गयी।

जिव्हा परीक्षण में जिव्हा का वर्ण, साम–निरामता देखी गयी। शब्द परीक्षा के अंतर्गत आटोप का परीक्षण किया गया। स्पर्श परीक्षा में रुग्ण की त्वचा, स्थानिक ताप का परीक्षण किया गया तथा ज्वर की निश्चिति की गयी। नेत्र परीक्षण में कृष्णाभता, पाण्डुता, लालिमा, दाह आदि का निरीक्षण किया गया। आकृति परीक्षण से कृशता, स्थूलता को देखा गया। नख परीक्षा से भी रक्ताल्पता निश्चिती हेतु की गई।

उरः परीक्षण के अंतर्गत श्वासकृच्छता, श्वसन गति, श्वास एवं हृदयगति, हृदय ध्वनि को श्रवणयंत्र की सहायता से अध्ययन किया गया।

प्रकृति परीक्षण शारीरिक विशेषताओं के आधार पर और प्रकृति परीक्षा पत्र में जो परीक्ष्य भाव दिये गये है जैसे स्वर, निद्रा, आहार, केश, नख, क्षुधा, पिपासा, अग्नि, स्वेद प्रवृत्ति, मूत्रप्रवृत्ति आदि के आधार पर किया गया।

अग्नि परीक्षण – आहार मात्रा और जरण शक्ति (आहार पचन) के आधार पर किया गया।

रोगियों का प्रश्न परीक्षा तथा रोगी परीक्षा पत्रक में निर्दिष्ट विशेष लक्षणों के आधार पर ही व्याधि के लक्षणों की तीव्रता, कालावधि तथा निदान निश्चित किया गया।

चिकित्सा कालावधि में रोगियों को अन्य औषधि द्रव्य लेने से मना कर दिया गया। साथ ही चिकित्सा काल में प्रयुक्त औषधि द्रव्य के शरीर पर होने वाले उपद्रव का भी निरीक्षण किया गया। रोगियों के लक्षणों का परीक्षण सात दिन बाद किया गया।

रोगी चयन-

1. आमवात के ऐसे रोगी जिनकी उम्र 20 वर्ष से अधिक एवं 60 वर्ष से कम है उनको ही इस शोधकार्य में शामिल किया गया।
2. इस शोध कार्य हेतु आमवात के रोगियों का चयन एवं पंजीयन एक निश्चित प्रारुप तैयार कर किया गया। जिसमें रोगी के संबंध में समस्त जानकारी जैसे उम्र, लिंग, धर्म, जाति, व्यवसाय, वैवाहिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, सामाजिक आर्थिक स्तर, रोगी का पता, व्याधि के संबंध में निदान, पूर्वरुप एवं लक्षण इत्यादि की जानकारी एकत्रित कर अध्ययन किया गया।
3. आमवात के अलावा अन्य घातक व्याधि/उपद्रव जैसे मधुमेह, उच्चरक्तचाप, शोष तथा अन्य उपद्रव हो ऐसे किसी रोगी का चयन इस अध्ययन हेतु नहीं किया गया।
4. अध्ययन हेतु रोगियों का चयन चिकित्सालय शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश एवं शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, निपनिया, रीवा, म0प्र0 के कायचिकित्सा–पंचकर्म विभाग में पंजीकृत रोगियों पर किया गया।
5. रोगी चयन का आधार – आमवात के लक्षणों जैसे संधिगत तथा सार्वदैहिक लक्षण के आधार पर किया गया। **विशेषतः जानु संधि विकृति** से पीड़ित रोगियों का चयन इस अध्ययन हेतु किया गया।

   संधिगत – संधिशूल, संधिशोथ, संधिराग, संधिस्तंभ, संचारी वेदना, संधि उष्णस्पर्शत्व, संधिकार्य हानि

   सार्वदेहिक – ज्वर, शिरःशूल, निद्रानाश, कण्डू, दाह, स्तेमित्व, बहुमूत्रता, भ्रम, हृदग्रह, अंगग्रह, गौरव, आलस्य, मुखप्रसेक, अरुचि, तृष्णा, क्षुधानाश, छर्दि, आन्त्रकूजन, विबंध, कुक्षिशूल, आनाह

   सहायक आधार (Criteria for the Diagnosis of Rheumatoid Arthritis)

   * Early morning stiffness > 1 hour
   * Arthritis of three or more joints
   * Arthritis of hand joints
   * Symmetrical arthritis

* A positive serum Rheumatoid Factor (R.A. Test)
* Typical Radiological changes

Diagnosis of Rheumatoid Arthritis made with 4 or more criteria.

रोगी संख्या :

आमवात के कुल 90 रोगियों का चयन चिकित्सकीय अध्ययन हेतु किया गया।

चिकित्सा समूह :

आमवात के रोगियों को समूह 'क' समूह 'ख' एवं समूह 'ग' में विभाजित कर अध्ययन किया गया। प्रत्येक समूह में 30–30 रोगियों का चयन किया गया, जिन्हें 45 दिनों तक चिकित्सा निम्नानुसार दी गई।

- **समूह क –** वृहत सैन्धवादि तेल की जानुवस्ति का प्रयोग
- **समूह ख –** क्षार वस्ति का प्रयोग
- **समूह ग –** वृहत सैन्धवादि तेल की जानुवस्ति एवं क्षार वस्ति का सम्मिलित प्रयोग

परीक्षण :

चिकित्सा के दौरान नियमित रक्त की जांच जैसे Hb%, ESR, TLC, DLC, RA factor के साथ–साथ रोगी के Urine Test - Routine and Microscopic, X-ray Joints की जांच कराई गयी। रोगियों का सम्पूर्ण चिकित्सकीय परीक्षण तथा आयुर्वेदोक्त त्रिविध, षडविध, अष्टविध एवं दशविध परीक्षाओं से अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों को यथाक्रम रुग्णपत्रक पर चिकित्सापूर्व (B.T.) तथा चिकित्सापश्चात (A.T.) में अंकित किया गया।

चिकित्सकीय प्रभाव का आकलन :

चिकित्सा लाभ का आकलन हेतु रोगियों के संधिगत लक्षणों को शून्य से तीन तक स्कोर उनकी तीव्रता और मंदता के लिये तथा सार्वदेहिक लक्षण को शून्य से दो तक अंकीकरण किया गया तत्पश्चात चिकित्सा के प्रभाव का आकलन इसी अंकीकरण प्रक्रिया के आधार पर निर्धारित किया गया। इसके अतिरिक्त Functional assessment तथा रक्त संबंधी परीक्षा जैसे HB%, TLC, DLC, ESR, R.A. factor का भी आकलन चिकित्सा पूर्व एवं चिकित्सा पश्चात करवाया गया तथा चिकित्सकीय प्रभाव का आकलन किया गया।

रोगी चयन लक्षण समुच्चय :

संधिगत – (तीव्र –3, मध्यम –2, अल्प–1, लक्षण अभाव–0)

1. संधिशूल
2. संधिशोथ
3. संधिराग
4. संधिस्तंभ
5. संचारी वेदना
6. संधि उष्णस्पर्शत्व
7. संधिकार्य हानि

सार्वदेहिक – (उपस्थित –2, अल्प उपशय –1, पूर्ण उपशय –0)

ज्वर, शिरःशूल, निद्रानाश, कण्डू, दाह, स्तेमित्व, बहुमूत्रता, भ्रम, हृदग्रह, अंगग्रह, गौरव, आलस्य, मुखप्रसेक, अरुचि, तृष्णा, क्षुधानाश, छर्दि, आन्त्रकूजन, विबंध, कुक्षिशूल, आनाह

Functional Assessment –

1. Walking Time – Time taken to walk a distance of 25 feet
   - 0 : 15-20 sec.
   - 1 : 21-30 sec.
   - 2 : 31-40 sec.
   - 3 : > 40 sec.
2. Grip strength – ability to compress an inflated ordinary sphygmomanometer cuff
   - 0 : 200mmHg or more
   - 1 : 199-120 mmHg
   - 2 : 119-70 mmHg
   - 3 : under 70 mmHg
3. Foot pressure – ability of patients to press a weighing machine
   - 0 : 25 -21 kg
   - 1 : 20 -16 kg
   - 2 : 15 -10 kg
   - 3 : < 10 kg
4. General functional capacity
   - 0 : Complete ability to carry on all routine duties
   - 1 : Adequate normal activity despite slight difficulty in joint movement

2 : Few activities are persisting but patient can take care of himself

3 : Few activities are persisting and patient requires an attendant to take care of himself.

4 : Patients are totally bed ridden%

चिकित्सा के सम्पूर्ण प्रभाव का अध्ययन :

1. यदि 25% से कम लाभ, लक्षणों एवं अन्य परीक्षणों में पाया हैं तो कोई लाभ नहीं।
2. यदि 25% से अधिक एवं 50% से कम लाभ को अल्प लाभ की श्रेणी में रखा गया।
3. 50% से अधिक एवं 75% से कम लाभ यदि लक्षणों एवं परीक्षणों में मिलता है तो इसे मध्यम लाभ की श्रेणी में रखा गया।
4. 75% से अधिक एवं 99% से कम लाभ को उत्तम लाभ की श्रेणी में रखा गया।
5. लक्षणों एवं परीक्षणों में 100% लाभ मिलता है तो सम्पूर्ण लाभ की श्रेणी में रखा गया।

चिकित्सात्मक अध्ययन :

इस चिकित्सात्मक अध्ययन के अंतर्गत आयु, लिंग, वैवाहिक अवस्था, जाति, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, अग्नि, कोष्ठ, दोषप्रकृति, मानस प्रकृति, आहार, व्याधिकाल, दोष दुष्टि, धातु दुष्टि एवं स्त्रोतस दुष्टि इनके अनुसार रोगियों का अध्ययन किया गया। साथ ही आमवात के कारण, पूर्वरुप, लक्षण एवं प्रकारों को तालिकाबद्ध करके प्राप्त परिणामों का अध्ययन किया गया।

सांख्यिकी विश्लेषण :

आमवात के लक्षणों का चिकित्सापूर्व और चिकित्सा पश्चात प्राप्त परिणामों को सांख्यिकी रुप में Student 't' test के माध्यम से तालिकाबद्ध कर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

तालिका क्रमांक १
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में आयु वैभिन्य दर्शक तालिका

आयु (वर्ष)	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
20 – 30	08	07	07	22	24.44%
31 – 40	09	12	11	32	35.56%
41 – 50	07	08	08	23	25.56%
51 – 60	06	03	04	13	14.44%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त तालिका में आयु के अनुसार रोगियों को चार भागों में विभाजित किया गया। 20–30 वर्ष के आयुवर्ग में 22 (24.44%), 31–40 वर्ष के आयुवर्ग में 23 (35.56%), 41–50 वर्ष के आयुवर्ग में 23 (25.56 %) तथा 51–60 वर्ष आयुवर्ग में 13 (14.44%) रोगी पाये गये। सबसे अधिक रोगी 31–40 वर्ष आयु समूह में पाये गये तथा 31–50 वर्ष की आयु समूह के 61.12% रोगी पाये गये।

आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार यह व्याधि मध्यम आयु वर्ग में पायी जाती है। इस व्याधि से पीड़ित अधिकतर रोगी मध्यमावस्था के थे।

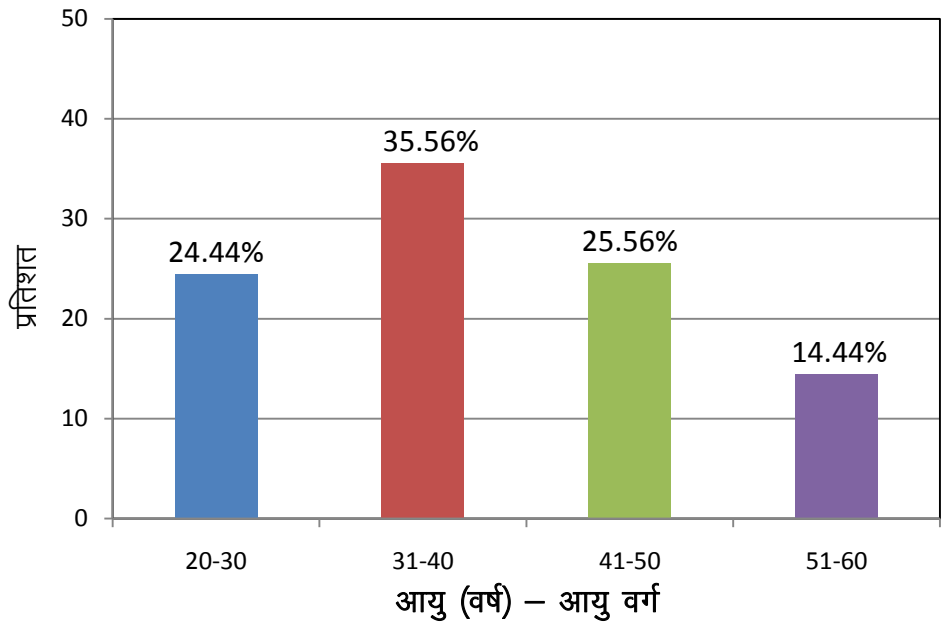

तालिका क्रमांक २
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में लिंग वैभिन्य दर्शक तालिका

लिंग	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
पुरुष	09	12	10	31	34.44%
स्त्री	21	18	20	59	65.56%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त तालिका के अनुसार आमवात व्याधि से पीड़ित रोगियों में 31 (34.44%) पुरुष और 59 (65.56%) स्त्री रोगी पाये गये। आयुर्वेद ग्रंथों में लिंग के अनुसार व्याधि की अधिकता का कुछ वर्णन प्राप्त नहीं होता है, परंतु आधुनिक वैद्यक शास्त्र में इसका प्रमाण 3 : 1 दिया है। आधुनिक वैद्यक शास्त्र के अनुसार पुरुष रुग्णों के अपेक्षा स्त्री रुग्ण अधिक पाये जाते है।

इस अध्ययन में चयनित रुग्णों में स्त्री रुग्ण की संख्या अधिक पायी गयी। स्त्री रुग्णों में अधिकतर रुग्ण गृहणियाँ है, जो अधिक समय घर में बैठे रहना, अत्याधिक भोजन करना, वेगों का धारण करना आदि कारणों से अग्निमांद्य होता है तथा घर में काम करते समय शीत जल के संपर्क में वारम्बार आने से वात का प्रकोप होकर आमवात उत्पन्न होता है।

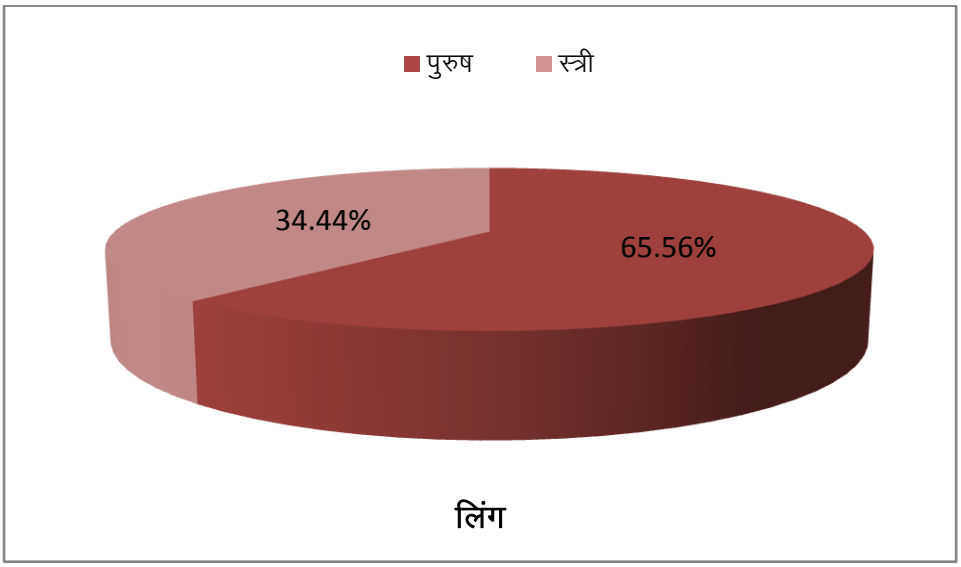

तालिका क्रमांक 3
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में वैवाहिक स्थिति दर्शक तालिका

वैवाहिक स्थिति	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
विवाहित	26	27	24	77	85.56%
अविवाहित	04	03	06	13	14.44%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त तालिका के अनुसार 77 (85.56%) रोगी विवाहित और 13 (14.44%) रोगी अविवाहित पाये गये। इस अध्ययन में चयनित सभी रोगी तरुणावस्था और प्रौढ़ावस्था के होने के कारण अधिकतर रोगी विवाहित पाये गये।

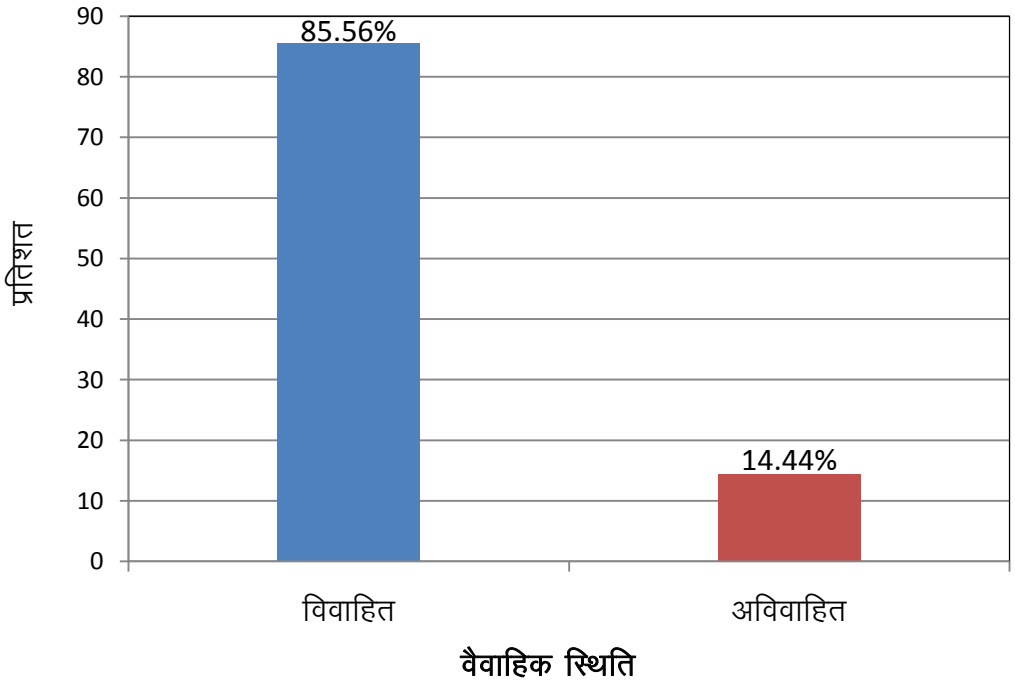

तालिका क्रमांक ४
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में धर्म वैभिन्य दर्शक तालिका

धर्म	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
हिन्दू	19	17	15	51	56.67%
मुस्लिम	08	06	05	19	21.11%
बौध्द	03	06	08	17	18.89%
इसाई	00	01	02	03	3.33%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त तालिका में धर्म के अनुसार रोगियों को चार भागों में विभाजित किया गया। हिन्दू धर्म के सर्वाधिक 51 (56.56 %), मुस्लिम धर्म के 19 (21.11%), बौध्द धर्म के 17 (18.89%) तथा 03 (3.33%) रोगी इसाई धर्म का पाया गया।

इससे कुछ विशेष धर्म में यह व्याधि होता होगा ऐसा निश्चित नहीं कहा जा सकता।

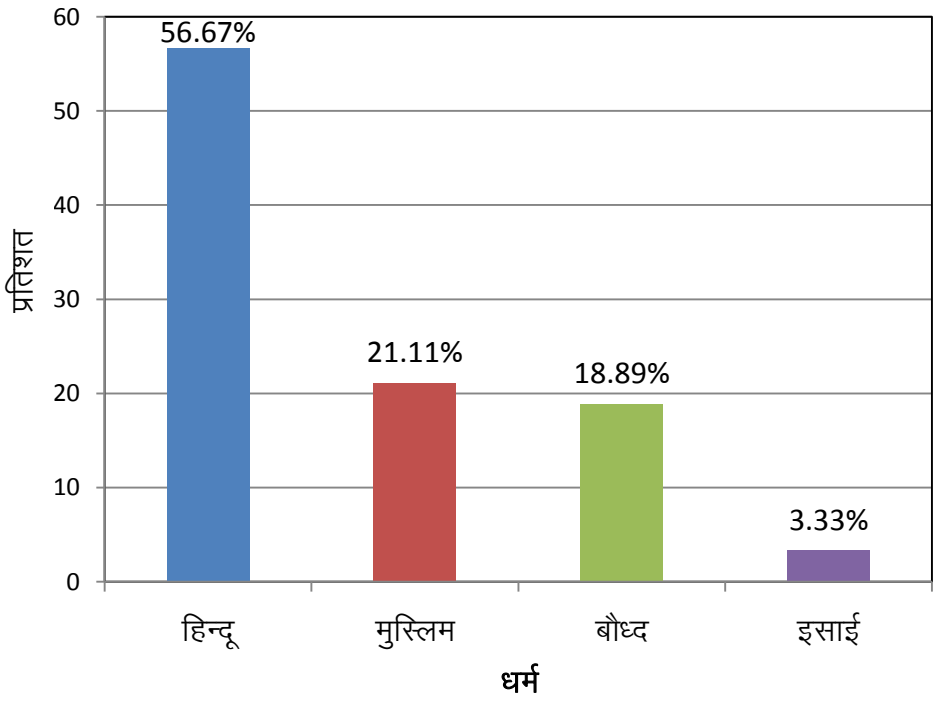

तालिका क्रमांक ५

आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में व्यवसाय वैभिन्य दर्शक तालिका

व्यवसाय	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
गृहणी	15	14	12	41	45.56%
नौकरी	10	09	12	31	34.44%
मजदूरी	04	02	02	08	8.89%
विद्यार्थी	00	01	00	01	1.11%
अन्य	01	04	04	09	10.0%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त तालिका के अनुसार 90 रोगियों में से 41 (45.56%) रोगी गृहणी, 31 (34.44%) रोगी नौकरी, 08 (8.89%) रोगी मजदूरी, 01 (1.11%) रोगी विद्यार्थी तथा 09 (10.0%) रोगी अन्य व्यवसाय करने वाले पाये गये।

इस अध्ययन में चयनित रोगियों में अधिकतर रोगी गृहणी और नौकरी करने वाले पाये गये, क्योंकि इन रोगियों में अपनी कार्यशक्ति से ज्यादा कार्य करने से धातुक्षीणता होती है और वायु का प्रकोप होता है, प्रकुपित वायु अग्नि को दूषित करके अग्निमांद्य उत्पन्न करता है उससे 'आम' की उत्पत्ति होती है। आम और प्रकुपित वायु से आमवात की उत्पत्ति होती है।

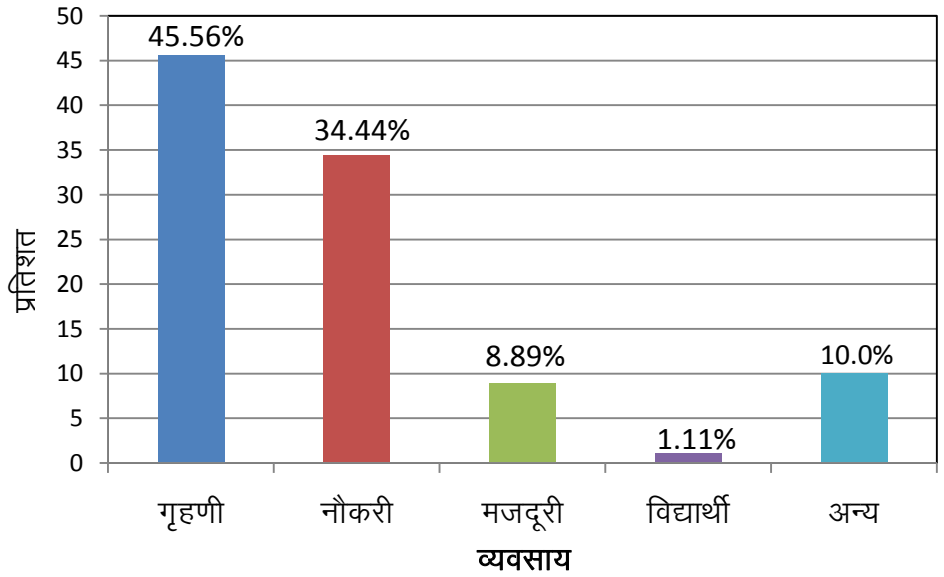

तालिका क्रमांक ६,
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में आर्थिक स्थिति वैभिन्य दर्शक तालिका

आय वर्ग	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
निम्न	11	11	10	32	35.55%
मध्यम	14	12	15	41	45.56%
उच्च	05	07	05	17	18.89%
कुल	30	30	30	90	100%

रोगियों की आर्थिक स्थिति का विभाजन निम्न प्रकार से किया गया।

* निम्न आयवर्ग – मासिक रुपये 10000 से कम
* मध्यम आयवर्ग – मासिक रुपये 10000 – 30000 के बीच में
* उच्च आयवर्ग – मासिक रुपये 30000 के ऊपर

उपरोक्त तालिका से यह दर्शित होता है कि कुल 90 रोगियों में से 32 (35.55%) रोगी निम्न आयवर्ग, 41 (45.56%) रोगी मध्यम आयवर्ग के और 17 (18.89%) रोगी उच्च आयवर्ग के पाये गये। आर्थिक एवं सामाजिक अवस्थानुसार वर्गीकरण करने से पता चलता है कि निम्न और मध्यम आयवर्ग में अधिकतर रोगी पाये गये क्योंकि आर्थिक दृष्टि से परिपुष्ट न होने से ऐसे व्यक्तियों में प्रतिदिन शरीर के आवश्यकता के अनुसार पौष्टिक आहार न मिलने से उनके शरीर में दुर्बलता आती है, धातु पोषण सम्यक् रुप से नहीं होता, फलस्वरुप वातप्रकोप होता है। यह प्रकुपित वायु अग्नि को भी दुष्ट करता है। जिससे आम की निर्मिति होती है। प्रकुपित वायु एवं आम के संयोग से आमवात व्याधि उत्पन्न होती है।

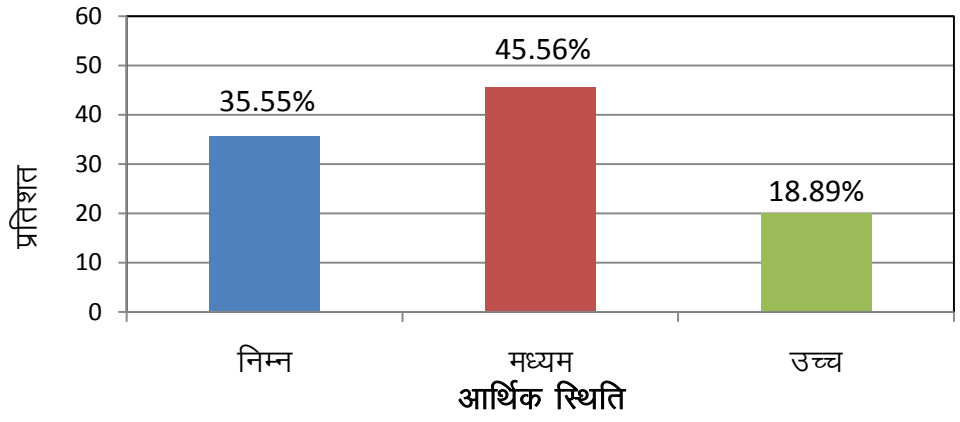

तालिका क्रमांक ७
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में शैक्षणिक स्थिति वैभिन्य दर्शक तालिका

शैक्षणिक स्थिति	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
शिक्षित	23	25	23	71	78.89%
अशिक्षित	07	05	07	19	21.11%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त वर्गीकरण में यह पाया गया है कि कुल 90 रोगियों में से 71 (78.89%) रोगी शिक्षित पाये गये और 19 (21.11%) रोगी अशिक्षित पाये गये।

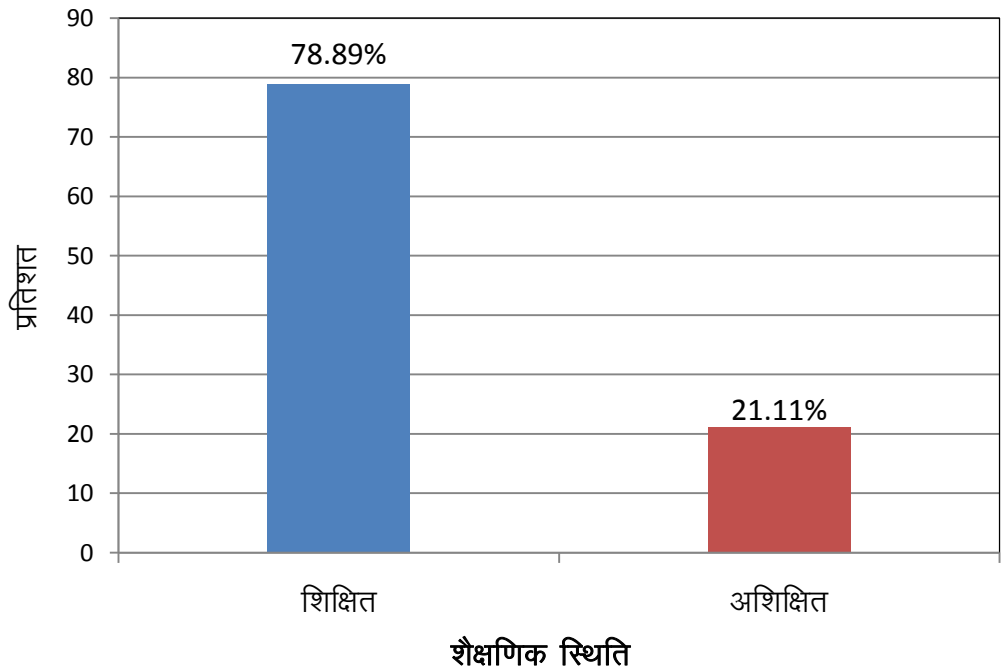

तालिका क्रमांक ८
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में आहार वैभिन्य दर्शक तालिका

आहार	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
निरामिष	09	06	07	22	24.44%
मिश्र	21	24	23	68	75.56%
कुल	30	30	30	90	100%

मिश्र वर्ग में उन रोगियों को लिया गया जो सप्ताह में कम से कम तीन दिन मांस सेवन करते थे और निरामिष (शाकाहारी) उन्हें कहा गया जो मांस का सेवन कदापि नहीं करते हुये केवल शाकाहार किया करते थे।

उपरोक्त वर्गीकरण में 90 रोगियों में से 68 (75.56%) रोगी मिश्र आहार लेने वाले और 22 (24.44%) रोगी निरामिष आहार लेने वाले पाये गये।

मांसाहार गुरु होने से पाचन होने में अधिक समय लगता है, ऐसे व्यक्तियों में आम निर्माण की प्रक्रिया अधिक हो सकती है। निरामिष रोगियों की अपेक्षा सामिष रोगी अधिक संख्या में पीड़ित पाये गये।

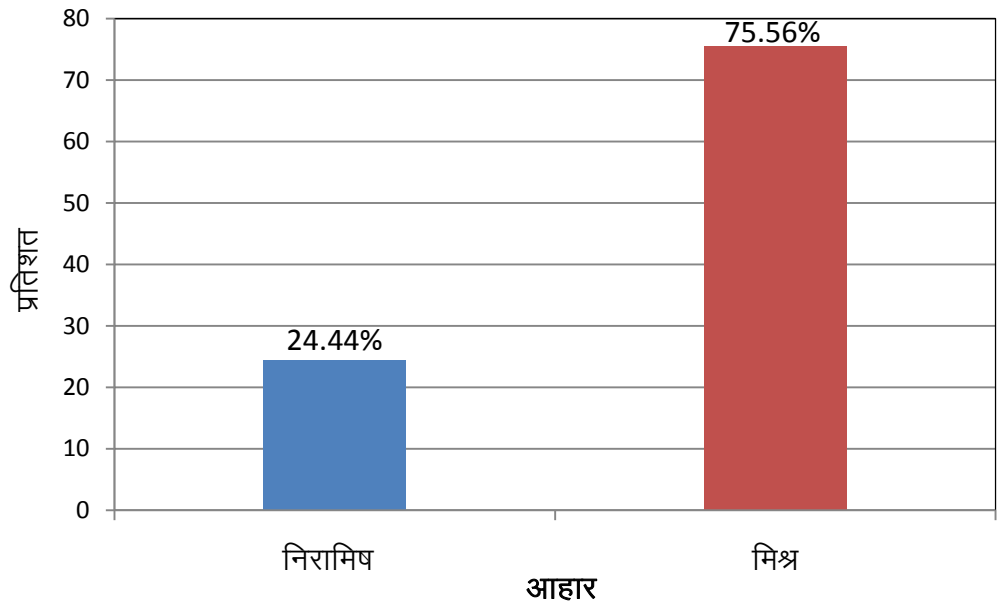

तालिका क्रमांक ९
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में अग्नि वैभिन्य दर्शक तालिका

अग्नि	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
मन्दाग्नि	16	21	18	55	61.11%
विषमाग्नि	14	09	10	33	36.67%
तीक्ष्णाग्नि	00	00	02	02	2.22%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त वर्गीकरण से यह दर्शित होता है कि कुल 90 रोगियों में 55 (61.11%) रोगी मन्दाग्नि के और 33 (36.67%) रोगी विषमाग्नि के पाये गये। तीक्ष्णाग्नि के केवल 02 (2.22%) रोगी इस अध्ययन में पाये गये।

मन्दाग्नि के कारण आहार का सम्यक् पाचन न होने से आम निर्मिति होती है और आम, वायु से प्रेरित होकर आमवात व्याधि उत्पन्न करता है।

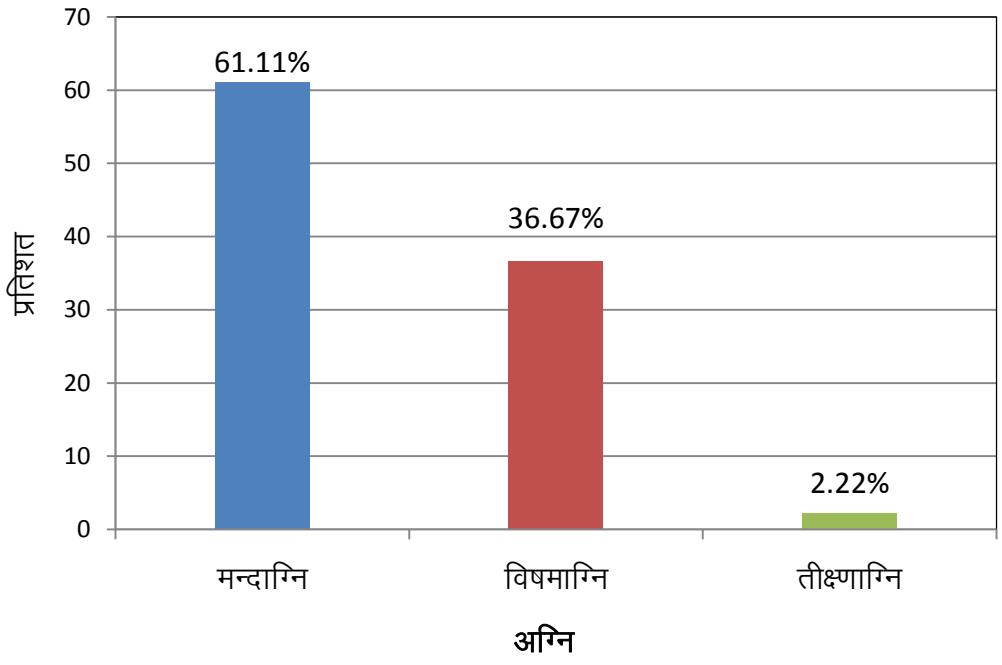

तालिका क्रमांक १०
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में कोष्ठ वैभिन्य दर्शक तालिका

कोष्ठ	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
मृदु	09	06	06	21	23.33%
मध्यम	16	20	18	54	60.00%
क्रूर	05	04	06	15	16.67%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त वर्गीकरण से यह दर्शित होता है कि कुल 90 रोगियों में से मृदु कोष्ठ के 21 (23.33%) रोगी, मध्यम कोष्ठ के 54 (60%) रोगी तथा क्रूर कोष्ठ के 15 (16.67%) रोगी पाये गये। कुल रोगियों में मध्यम कोष्ठ के रोगी सर्वाधिक पाये गये।

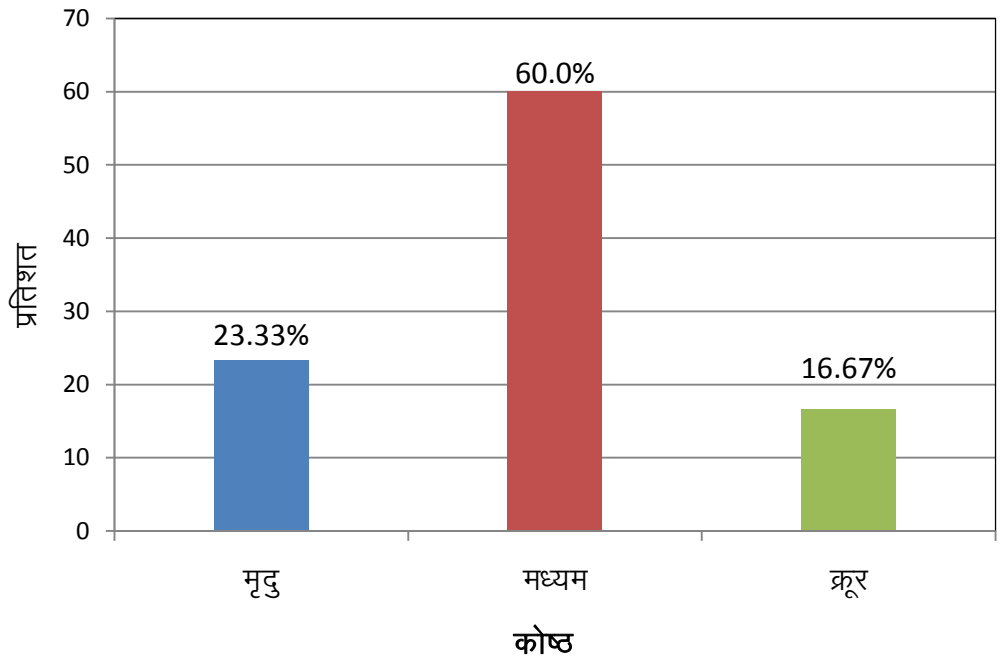

तालिका क्रमांक ११
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में दोषज प्रकृति वैभिन्य दर्शक तालिका

दोषज प्रकृति	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
वातपित्तज	07	05	08	20	22.22%
वातकफज	15	15	13	43	47.78%
कफपित्तज	08	10	09	27	30.0%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त तालिका के अनुसार वातपित्तज प्रकृति के 20 (22.22%), वातकफज प्रकृति के 43 (47.78%) तथा कफपित्तज प्रकृति के 27 (30%) रोगी पाये गये।

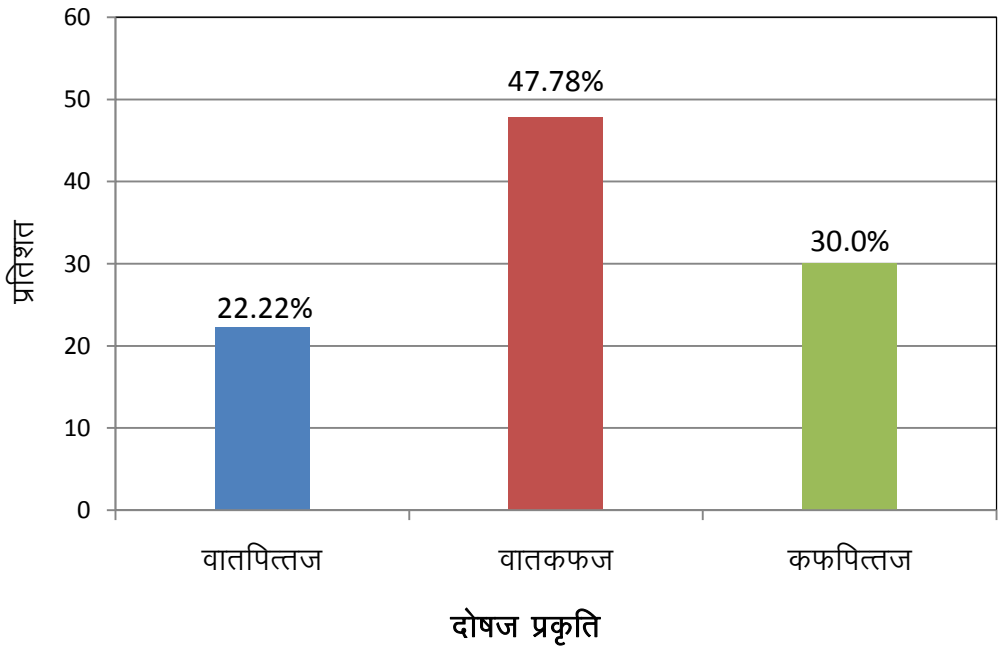

तालिका क्रमांक १२
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में मानस प्रकृति वैभिन्य दर्शक तालिका

मानस प्रकृति	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
सात्विक	00	00	00	00	00%
राजसिक	12	11	13	36	40%
तामसिक	18	19	17	54	60%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त तालिका के अनुसार राजसिक प्रकृति के 36 (40%) तथा तामसिक प्रकृति के 54 (60%) रोगी पाये गये। सात्विक प्रकृति का एक भी रोगी नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजसिक एवं तामसिक प्रकृति के लोगों में यह रोग अधिक मिलता है।

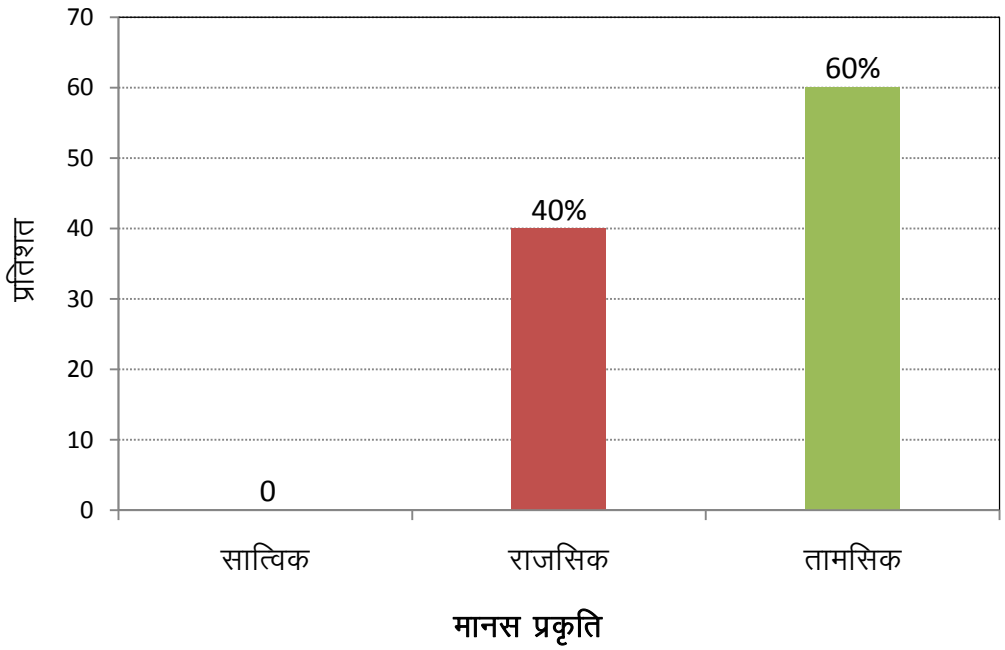

तालिका क्रमांक १३
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में कुलवृत्त दर्शक तालिका

कुलवृत्त	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
उपस्थित	10	09	08	27	30.0%
अनुपस्थित	20	21	22	63	70.0%
कुल	30	30	30	90	100%

उपस्थित वर्ग में उन रोगियों को रखा गया जिनके परिवार में किसी भी एक सदस्य में आमवात व्याधि से पीड़ित होने के लक्षण पाये गये या पूर्व में आमवात व्याधि से पीड़ित होने का कुलवृत्त उपस्थित (positive history) मिला। उपरोक्त वर्गीकरण में 90 रोगियों में से 27 (30%) रोगियों में कुलवृत्त उपस्थित और 63 (70%) रोगियों में कुलवृत्त अनुपस्थित पाया गया।

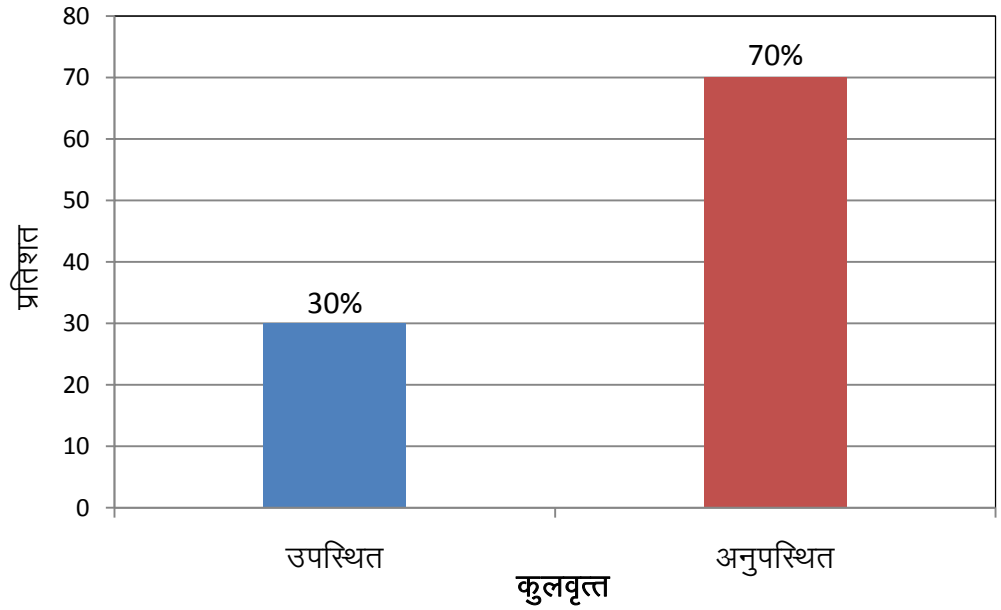

तालिका क्रमांक १४
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में व्याधिकाल दर्शक तालिका

व्याधिकाल	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
1 से 6 माह	04	09	05	18	20%
6 से 12 माह	12	11	13	36	40%
12 माह से अधिक	14	10	12	36	40%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त वर्गीकरण में यह पाया गया है कि कुल 90 रोगियों में से १ से ६ माह से आमवात व्याधि से पीड़ित 18 (20%) रोगी, ६ से १२ माह व्याधिकाल वाले 36 (40%) रोगी तथा १२ से १८ माह व्याधिकाल वाले 36 (40%) रोगी पाये गये। आमवात व्याधि अधिक समय तक चलने वाली व्याधि है अतः रोग से पीड़ित अधिक समय के रोगी अधिकतर मिले।

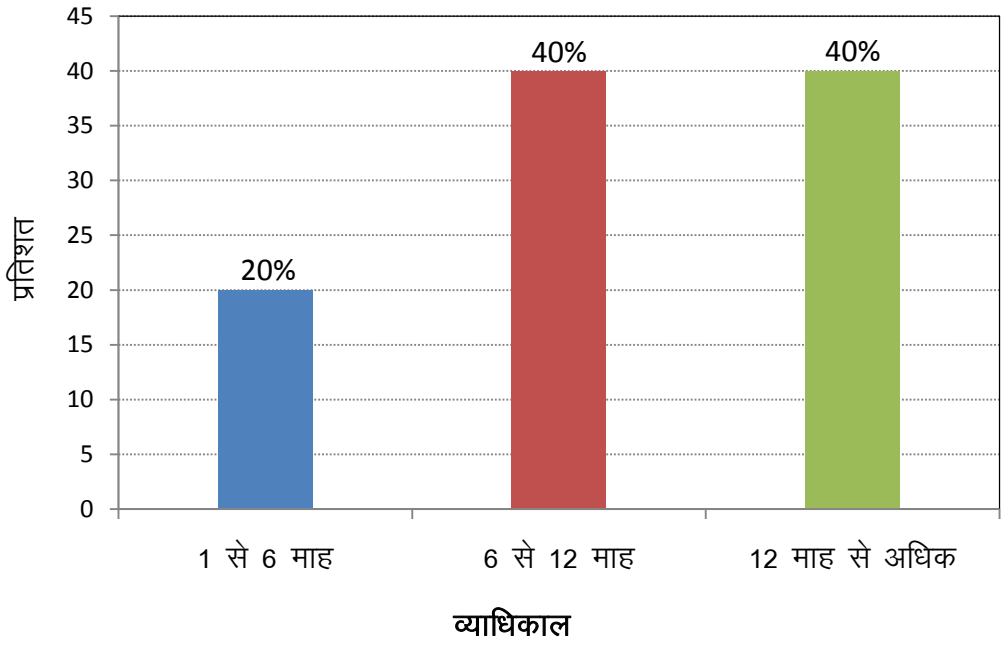

तालिका क्रमांक १७
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में प्राप्त दोषानुबंध दर्शक तालिका

दोषानुबंध	लक्षण	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
		समूह क	समूह ख	समूह ग		
वातानुबंध	संधिशूल	14	16	13	43	47.78%
पित्तानुबंध	दाह, पाक, स्थानिक ज्वर	05	07	05	17	18.89%
कफानुबंध	स्तैमित्य, कण्डू, गौरव	11	07	12	30	33.33%
कुल		30	30	30	90	100%

इस अध्ययन में 90 रोगियों के लक्षणों से दोषानुबंध का अध्ययन किया गया। जिस रोगी में संधिशूल लक्षण प्राधान्यतः होने पर वातानुबंध, संधिस्थान पर दाह, पाक एवं उष्णस्पर्श होने पर पित्तानुबंध एवं स्तैमित्य, गुरुता, कण्डू यह लक्षण पाये जाने पर कफानुबंध समझा गया।

उपरोक्त तालिका में 90 रोगियों में से वातानुबंध 43 (47.78%), पित्तानुबंध 17 (18.89%) तथा कफानुबंध 30 (33.33%) रोगी पाये गये। यह दर्शाता है कि कफानुबंधित एवं वातानुबंधित व्यक्तियों में यह व्याधि अधिक मिलती है।

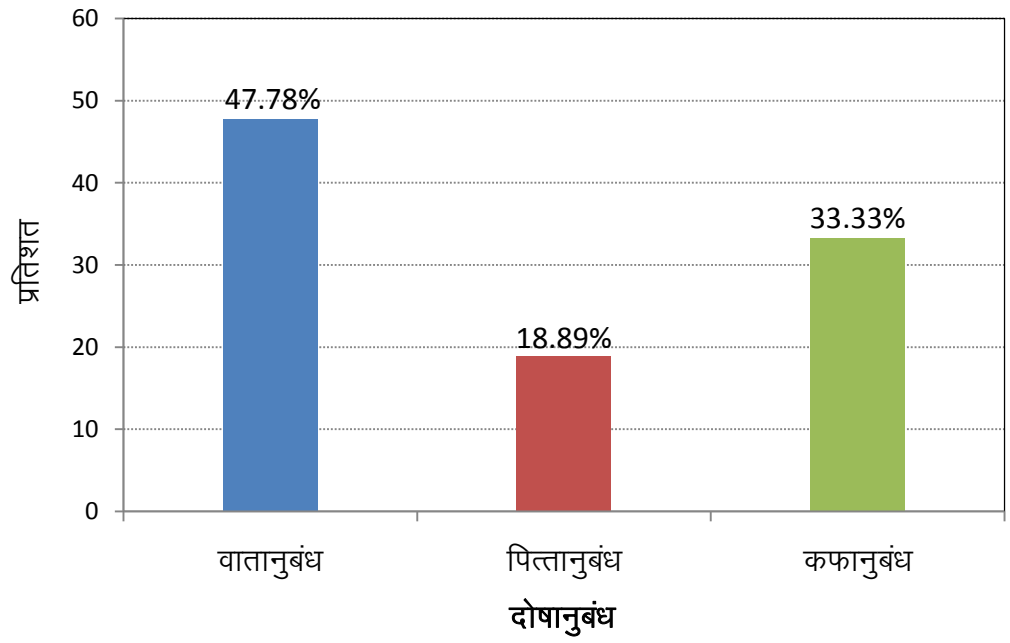

तालिका क्रमांक १६
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में दोष दुष्टि वैभिन्य दर्शक तालिका

दोष दुष्टि	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
वात कफ	16	20	18	54	60.0%
वात पित्त	04	04	03	11	12.22%
पित्त कफ	08	05	06	19	21.11%
त्रिदोष	02	01	03	06	6.67%
कुल	30	30	30	90	100%

इस अध्ययन में 90 रोगियों के लक्षणों से दोष दुष्टि का अध्ययन किया गया। उपरोक्त तालिका में 90 रोगियों में से वात कफ दुष्टि के 54 (60%), वातपित्त दुष्टि के 11 (12.22%), पित्त कफ दुष्टि के 19 (21.11%) तथा त्रिदोष दुष्टि के 06 (6.67%) रोगी पाये गये। यह दर्शाता है कि वात एवं कफ दोष दुष्टि से यह व्याधि अधिक होती है।

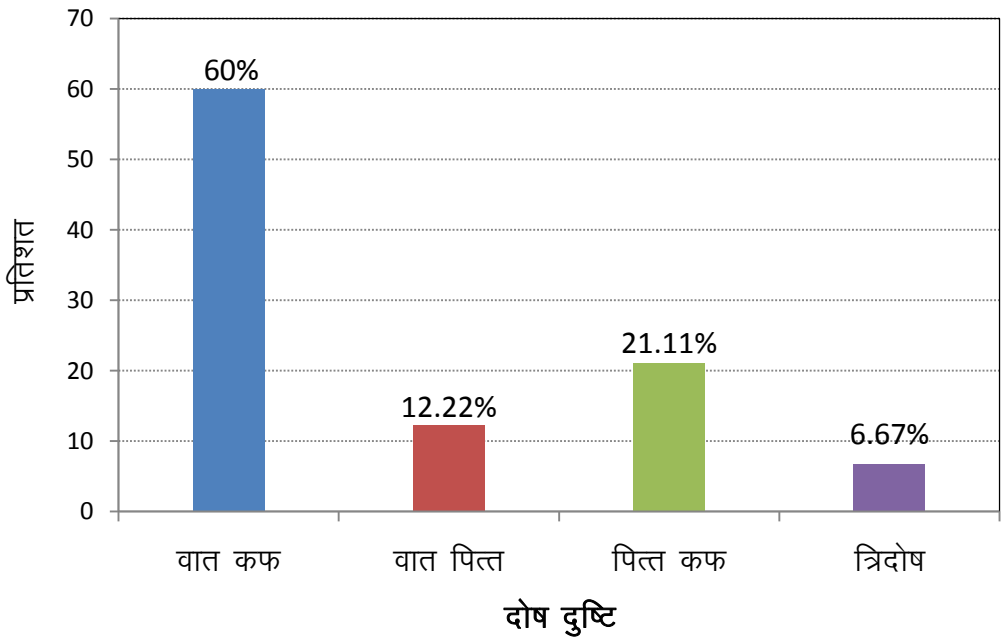

तालिका क्रमांक १७
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में धातु दुष्टि वैभिन्य दर्शक तालिका

धातु दुष्टि–लक्षण	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
रस–पर्वरुजा, अरुचि, अंगमर्द, हृद्ग्रह, ज्वर	30	30	30	90	100%
रक्त–अस्यपाक, रक्तनेत्र, मण्डल	04	02	01	07	7.78%
मांस–अंगमर्द, अतिगौरव	28	25	26	79	87.78%
मेद–करपादसुप्तता, पिपासा, तन्द्रा	12	11	15	38	42.22%
अस्थि–संधिशूल, अस्थिपर्वभेद	30	30	30	90	100%
मज्जा–पर्वरुक्, सर्वांग गौरव, पर्वभेद	28	28	30	86	95.56%
शुक्र	00	00	00	00	00

इस अध्ययन में 90 रोगियों के लक्षणों से धातु दुष्टि का अध्ययन किया गया। रस एवं अस्थि धातु दुष्टि सभी 90 (100%) रोगियों में, मांस एवं मज्जा धातु दुष्टि क्रमशः 79 (87.78%) एवं 86 (95.56%) तथा मेद एवं रक्त धातु दुष्टि क्रमशः 38 (42.22%) एवं 07 (7.78%) रोगियों में पायी गयी। आमवात व्याधि प्रमुख रुप से रस धातु की दुष्टि से उत्पन्न होती हैं यह शास्त्र सम्मत भी है।

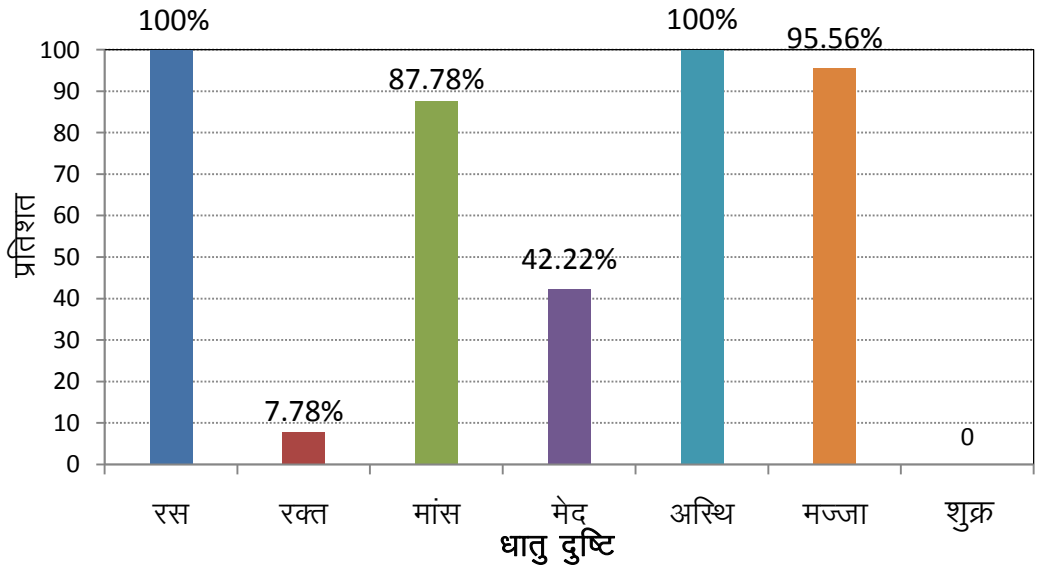

तालिका क्रमांक १८
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में स्त्रोतस दुष्टि वैभिन्य दर्शक तालिका

स्त्रोतस दुष्टि	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
उदकवह	24	27	28	79	87.78%
अन्नवह	28	27	29	84	93.33%
रसवह	30	30	29	89	98.89%
रक्तवह	04	02	03	09	10.0%
मांसवह	28	25	26	79	87.78%
मेदवह	12	11	14	37	41.11%
अस्थिवह	30	30	30	90	100%
मज्जावह	28	28	30	86	95.56%
मूत्रवह	11	12	10	33	36.67%
पुरीषवह	23	24	20	67	74.44%
स्वेदवह	12	10	14	36	40.0%

इस अध्ययन में 90 रोगियों के लक्षणों से स्त्रोतस दुष्टि का अध्ययन किया गया। अन्नवह स्त्रोतस दुष्टि, रसवह स्त्रोतस दुष्टि तथा अस्थिवह एवं मज्जावह स्त्रोतस दुष्टि सर्वाधिक रोगियों में पायी गयी। यह व्याधि अन्नवह स्त्रोतस प्रणाली के दूषित होने से उत्पन्न होती है क्योंकि मुख्य रुप से आमोत्पत्ति इस व्याधि का कारण हैं और यह शास्त्र सम्मत वर्णन उपरोक्त तालिका से भी स्पष्ट होता हैं।

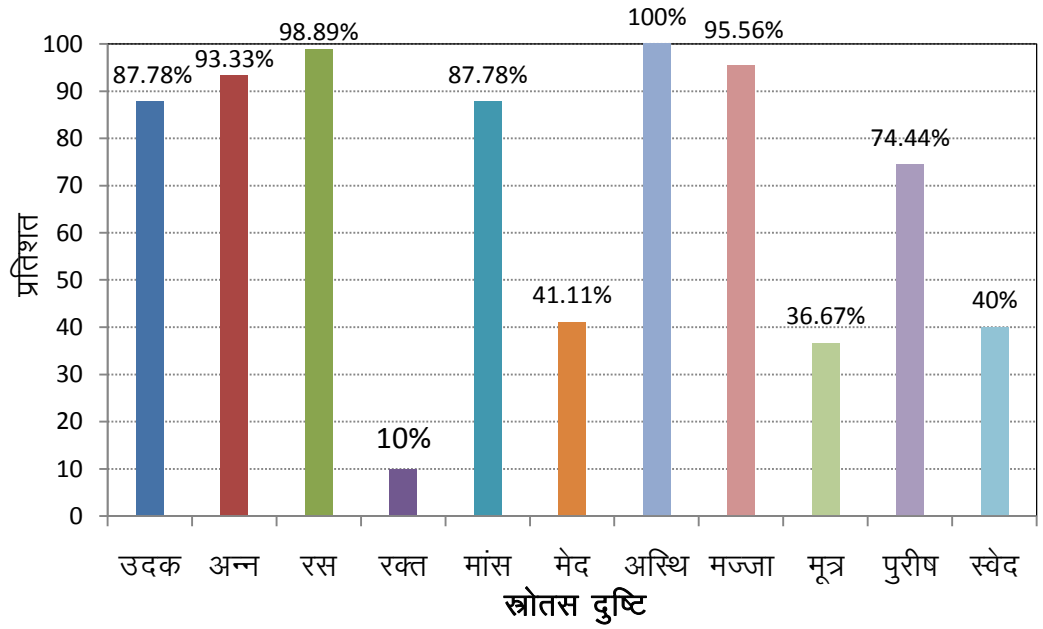

तालिका क्रमांक १९
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में व्याधि निदान दर्शक तालिका

व्याधि निदान	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
अकाल भोजन	23	24	22	69	76.67%
अहित भोजन	21	24	28	73	81.11%
विरुद्ध आहार	04	06	02	12	13.33%
अति गुरु, स्निग्ध, शीतद्रव	19	18	23	60	66.67%
अति रुक्ष भोजन	11	12	07	30	33.33%
दिवास्वाप, रात्रिजागरण	13	16	12	41	45.56%
अतिश्रम, व्यायाम	04	08	10	22	24.44%
शोक, चिन्ता, भय, क्रोध	16	10	08	34	37.78%
निश्चलत्व	15	18	12	45	50.0%

उपरोक्त तालिका के अनुसार 90 रोगियों में व्याधि के कारणों का अध्ययन किया गया। जिसमें 69 (76.67%) अकाल भोजन, सर्वाधिक 73 (81.11%) अहित भोजन, 12 (13.33%) विरुद्ध आहार, 60 (66.67%) अति गुरु, स्निग्ध, शीतद्रव सेवन, 30 (33.33%) अति रुक्ष भोजन, 41 (45.56%) दिवास्वाप, रात्रिजागरण, 22 (24.22%) अतिश्रम, व्यायाम, 34 (37.78%) शोक, चिन्ता, भय, क्रोध तथा 45 (50%) निश्चलत्व यह व्याधि निदान पाया गया।

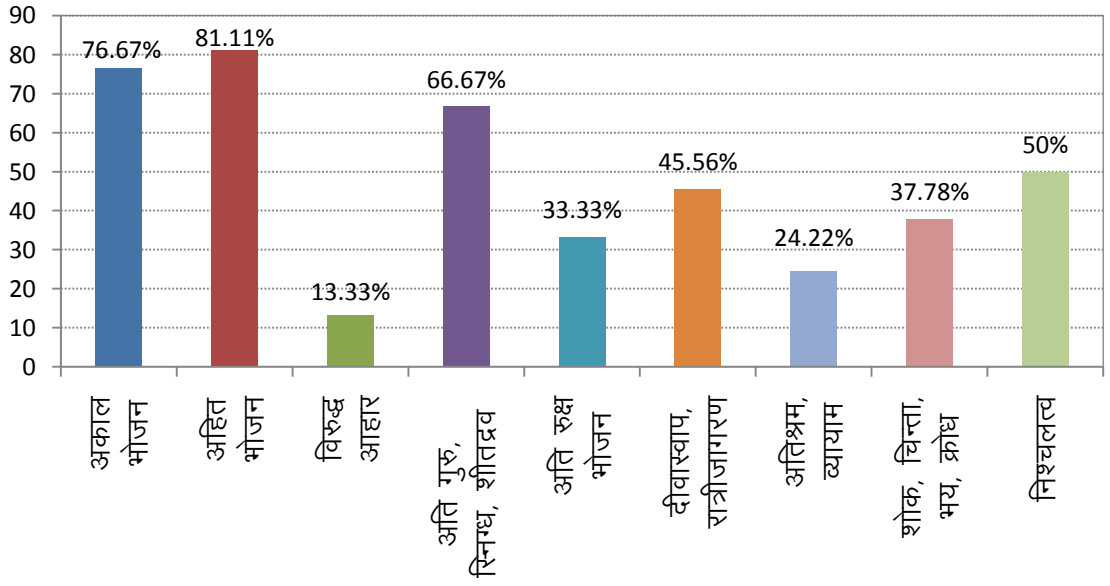

तालिका क्रमांक २०
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में उपस्थित संधिगत लक्षण दर्शक तालिका

उपस्थित संधिगत लक्षण	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
संधिशूल	30	30	30	90	100%
संधिशोथ	28	27	28	83	92.22%
संधिराग	24	22	27	73	81.11%
संधिस्तंभ	28	27	28	83	92.22%
संचारी वेदना	22	26	27	75	83.33%
संधि उष्णस्पर्शत्व	25	23	24	72	80%
संधिकार्य हानि	24	22	26	72	80%

आमवात से पीड़ित 90 रोगियों में उपस्थित संधिगत लक्षणों का अध्ययन किया गया। इसमें संधिशूल सभी 90 (100%) रोगियों में पाया गया। संधिशोथ 83 (92.22%) रोगियों में, संधिराग 73 (81.11%) में, संधिस्तंभ 83 (92.22%) में, संचारी वेदना 75 (83.33%) में, संधि उष्णस्पर्शत्व तथा संधिकार्य हानि 72 (80%) रोगियों में यह लक्षण पाये गये।

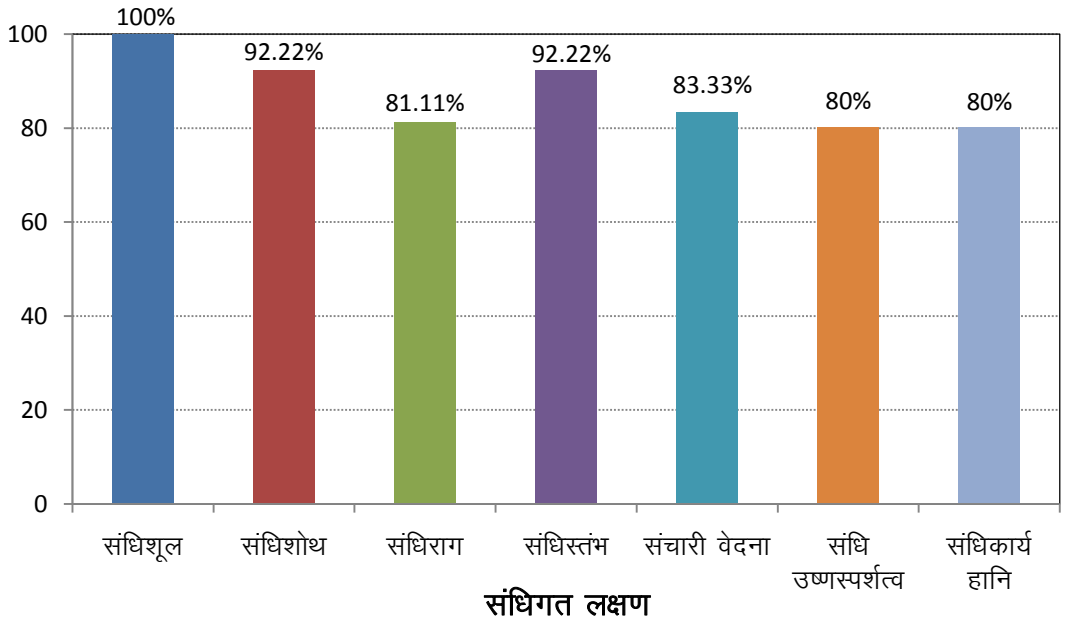

तालिका क्रमांक २१
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में उपस्थित सार्वदेहिक लक्षण दर्शक तालिका

क्र.	सार्वदेहिक लक्षण	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
		समूह क	समूह ख	समूह ग		
1	ज्वर	12	14	12	38	42.22%
2	शिरःशूल	06	09	10	25	27.78%
3	निद्रानाश	19	18	19	56	62.22%
4	कण्डू	03	07	06	16	17.78%
5	दाह	09	08	07	24	26.67%
6	स्तेमित्व	12	11	10	33	36.67%
7	बहुमूत्रता	21	18	19	58	64.44%
8	भ्रम	07	07	08	22	24.44%
9	हृदग्रह	06	07	06	19	21.11%
10	अंगग्रह	22	19	18	59	65.56%
11	गौरव	20	17	16	53	58.89%
12	आलस्य	19	19	20	58	64.44%
13	मुखप्रसेक	06	05	05	16	17.78%
14	अरुचि	17	20	18	55	61.11%
15	तृष्णा	15	14	12	41	45.56%
16	क्षुधानाश	17	14	18	49	54.44%
17	छर्दि	07	05	04	16	17.78%
18	आन्त्रकूजन	07	06	06	19	21.11%
19	विबंध	23	25	23	71	78.89%
20	कुक्षिशूल	10	08	08	26	28.89%
21	आनाह	23	24	22	69	76.67%
22	शूनतांग	09	08	07	24	26.67%

आमवात से पीड़ित 90 रोगियों में उपस्थित सार्वदेहिक लक्षणों का अध्ययन किया गया। इसमें विबंध सर्वाधिक 78.89% रोगियों में पाया गया। 42.22% में ज्वर, 27.78% में

शिरःशूल, 62.22% में निद्रानाश, 17.78% में कण्डू, 26.67% में दाह, 36.67% में स्तेमित्व, 64.44% में बहुमूत्रता, 24.44% में भ्रम, 21.11% में हृदग्रह, 65.56% में अंगग्रह, 58.89% में गौरव, 64.44% में आलस्य, 17.78% में मुखप्रसेक, 61.11% में अरुचि, 45.56% में तृष्णा, 54.44% में क्षुधानाश, 17.78% में छर्दि, 21.11% में आन्त्रकूजन, 28.89% में कुक्षिशूल, 76.67% में आनाह तथा 26.67% में शूनतांग यह लक्षण पाये गये।

आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में उपस्थित सार्वदेहिक लक्षण प्रतिशत

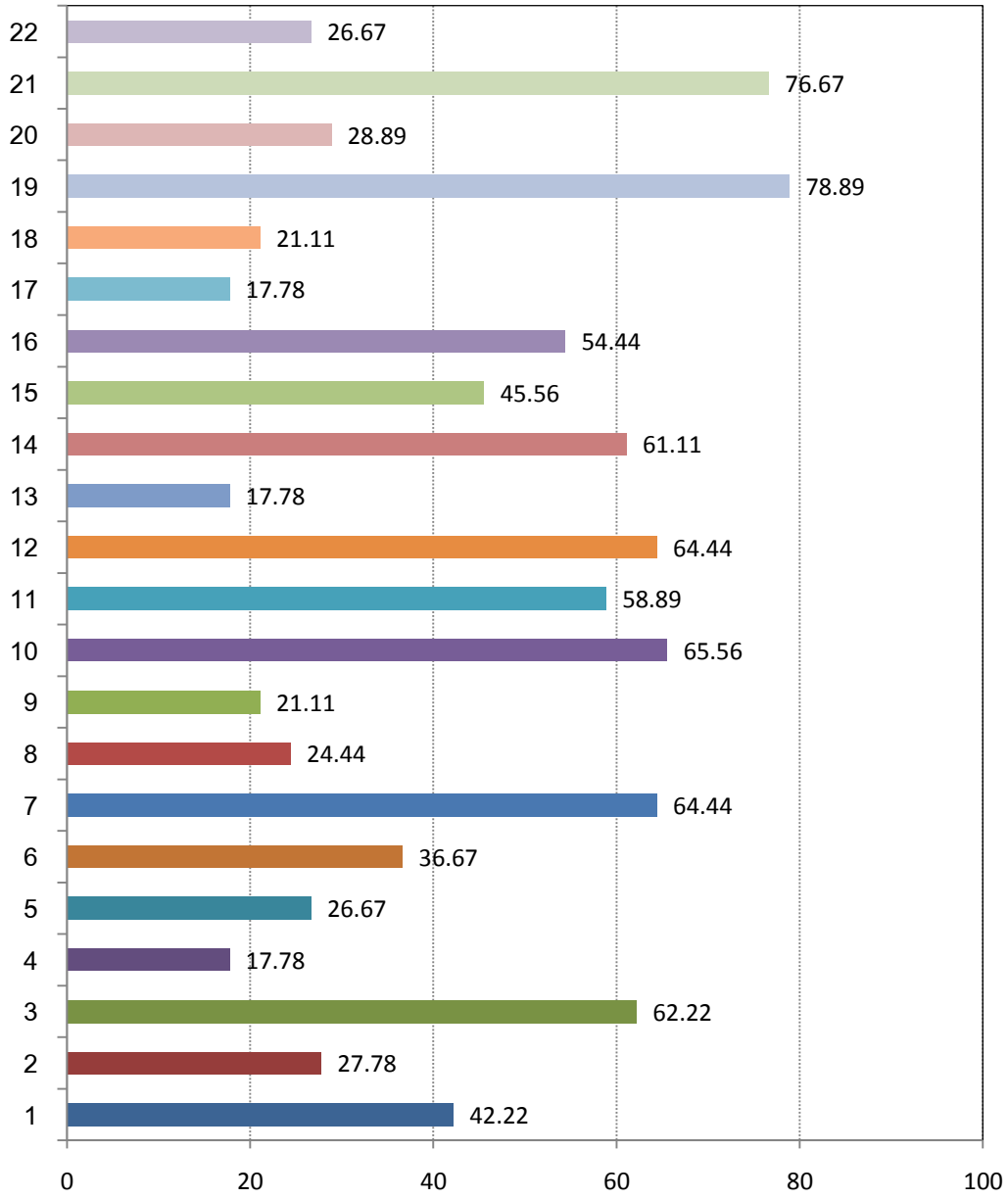

तालिका क्रमांक २२
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में संधिग्रस्तानुसार वर्गीकरण दर्शक तालिका

सन्धिप्रकार	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
जानु संधि	30	30	30	90	100%
कूर्पर संधि	23	14	16	53	58.89%
गुल्फ संधि	18	21	25	64	71.11%
मणिबंध संधि	21	24	22	67	74.44%
अंस संधि	13	04	09	26	28.89%
त्रिक संधि	09	02	06	17	18.89%
हस्तांगुलीपर्व संधि	08	12	19	39	43.33%
पादांगुलीपर्व संधि	07	09	02	18	20%

उपरोक्त तालिका के अनुसार कुल 90 रोगियों में से 90 (100%) रोगियों में जानुसंधि, 53 (58.89%) रोगियों में कर्पूर संधि, 64 (71.11%) रोगियों में गुल्फसंधि, 67 (74.44%) में मणिबंध संधि, 26 (28.89%) में अंससंधि, 17 (18.89%) में त्रिकसंधि, 39 (43.33%) में हस्तांगुलीपर्व संधि तथा 18 (20%) रोगियों में पादांगुलीपर्व संधिग्रस्तता पायी गयी। अधिकतर रोगियों में संधिग्रस्तता बड़े संधियों में पायी गयी।

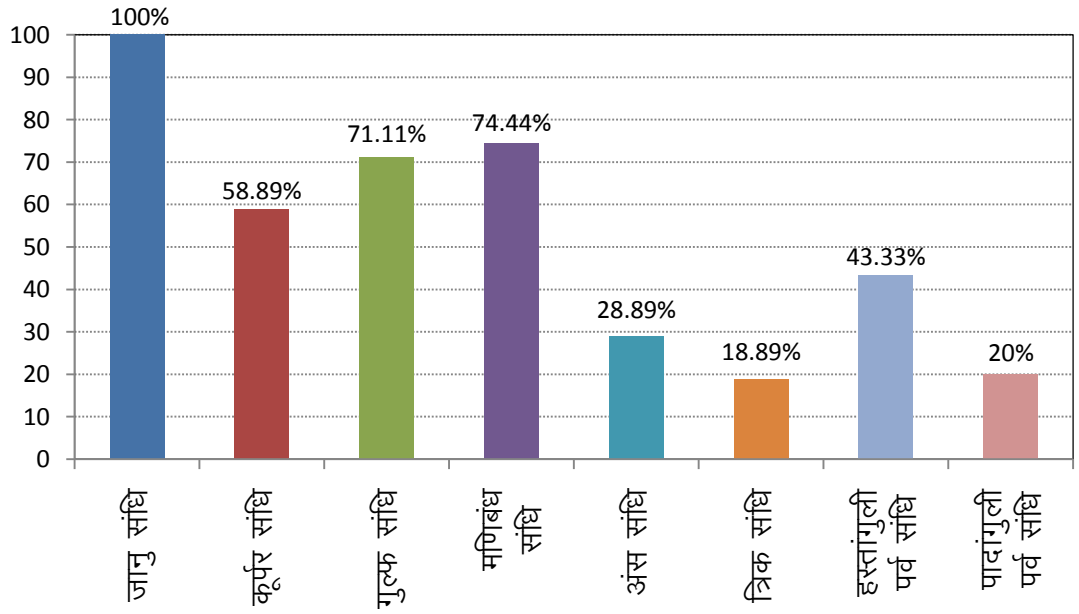

तालिका क्रमांक २३
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में Rheumatoid Nodule उपस्थिती दर्शक तालिका

Rheumatoid Nodule	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
उपस्थित	04	08	09	21	23.33%
अनुपस्थित	26	22	21	69	76.67%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त वर्गीकरण में 90 रोगियों में से 21 (23.33%) रोगियों में Rheumatoid Nodule उपस्थित और 69 (76.67%) रोगियों में अनुपस्थित पाया गया।

तालिका क्रमांक २४
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में Deformity उपस्थिती दर्शक तालिका

Deformity	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
Flexion contractures	02	03	01	06	6.67%
Swan neck	03	04	01	08	8.89%
Boutenniere	00	02	03	05	5.56%
Ankylosis	01	01	02	04	4.44%
Ulnar deviation	00	01	02	03	3.33%
Valgus	00	00	01	01	1.11%
No deformity	24	19	20	63	70%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त वर्गीकरण में 90 रोगियों में से 06 (6.67%) रोगियों में Flexion contractures, 08 (8.89%) रोगियों में Swan neck, 05 (5.56%) रोगियों में Ankylosis, 03 (3.33%) रोगियों में Ulnar deviation, 01 (1.11%) रोगियों में Valgus deformity दिखाई दी। 63 (70%) रोगियों में किसी भी प्रकार की संधिगत deformity नहीं पायी गयी।

तालिका क्रमांक २७
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में Rheumatoid Factor उपस्थिती दर्शक तालिका

Rheumatoid Factor	रोगियों की संख्या			कुल	प्रतिशत
	समूह क	समूह ख	समूह ग		
उपस्थित (+ve)	22	21	24	67	74.44%
अनुपस्थित (-ve)	08	09	06	23	25.56%
कुल	30	30	30	90	100%

उपरोक्त वर्गीकरण में 90 रोगियों में से 67 (74.44%) रोगियों में Rheumatoid Factor उपस्थित (Positive) और 23 (25.56%) रोगियों में अनुपस्थित (Negative) पाया गया।

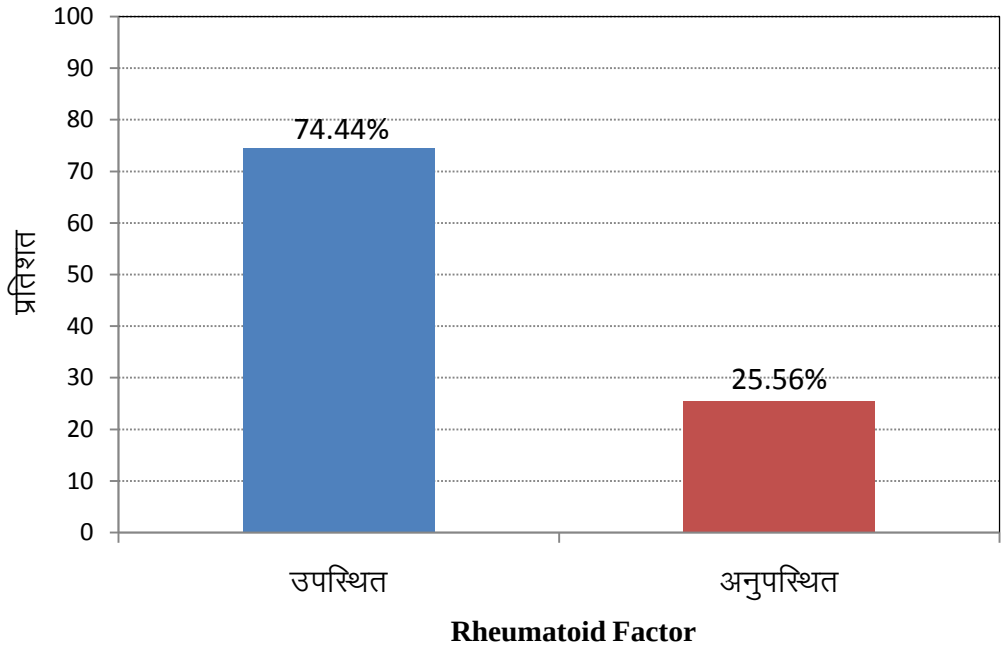

तालिका क्रमांक २६
समूह ख और समूह ग के रोगियों में सम्यक् बस्ति लक्षण दर्शक तालिका

सम्यक् बस्ति लक्षण	रोगियों की संख्या		कुल	प्रतिशत
	समूह ख	समूह ग		
प्रसृष्ट विट्कता	21	18	39	43.33%
प्रसृष्ट मूत्रता	12	14	26	28.89%
प्रसृष्ट वातता	18	17	35	38.89%
आशय लाघ्वता	15	21	36	40.0%
रोगोपशमन	24	20	44	48.89%
प्रकृतिस्थता	09	09	18	20.0%
अग्नि तीक्ष्णता	20	24	44	48.89%

आमवात से पीड़ित रोगियों (क्षारवस्ति समूह ख एवं ग) में सम्यक् बस्ति लक्षणों का अध्ययन किया गया। आयुर्वेद शास्त्र में सम्यक् बस्ति के लक्षणों के आधार पर ही औषधि के चिकित्सकीय प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है। सम्यक् बस्ति के लक्षणों में प्रसृष्ट विट्कता यह लक्षण सर्वाधिक 39 (43.33%) रोगियों में पाया गया। 26 (28.89%) रोगियों में प्रसृष्ट मूत्रता, 35 (38.89%) में प्रसृष्ट वातता, 36 (40%) में आशय लाघ्वता, 44 (48.89%) में रोगोपशमन, 18 (20%) में प्रकृतिस्थता तथा 44 (48.89%) में अग्नि तीक्ष्णता यह लक्षण पाये गये। इस चिकित्सकीय अध्ययन में प्रयुक्त क्षार बस्ति का प्रभाव समुह ख और समूह ग के रोगियों में अच्छा प्रदर्शित होता है।

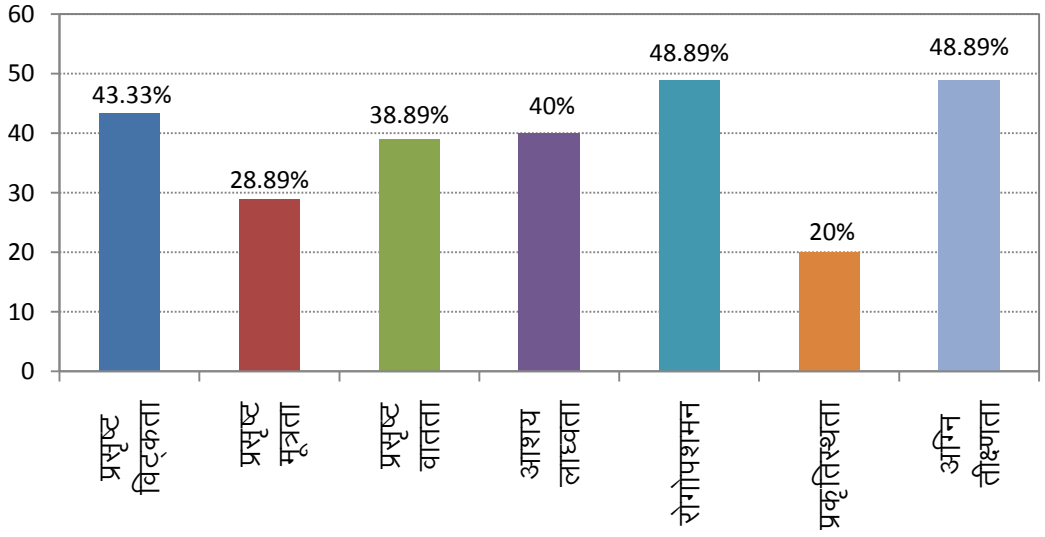

तालिका क्रमांक २७
आमवात के संधिगत लक्षणों में उपशय प्रतिशत दर्शक तालिका

संधिगत लक्षण	समूह क			समूह ख			समूह ग		
	Mean Score		Relief %	Mean Score		Relief %	Mean Score		Relief %
	BT	AT		BT	AT		BT	AT	
संधिशूल	2.63	1.53	41.82	2.50	1.03	58.80	2.40	0.90	62.50
संधिशोथ	2.36	1.29	45.33	2.26	1.04	53.98	2.18	0.75	65.59
संधिराग	2.17	1.33	38.24	2.09	1.00	52.15	2.07	0.70	66.18
संधिस्तंभ	2.54	1.50	40.94	2.15	1.04	51.62	2.32	0.64	72.41
संचारी वेदना	2.68	1.59	40.67	2.15	0.85	60.93	2.26	0.85	62.38
संधि उष्णस्पर्शत्व	2.32	1.28	44.82	2.17	1.09	50.23	2.29	0.79	65.50
संधिकार्य हानि	2.46	1.54	37.39	1.95	1.00	48.71	2.31	0.73	68.39

उपरोक्त तालिका के अनुसार तीनों समूह में आमवात के संधिगत लक्षणों में उपशय प्रतिशत निकाला गया। समूह 'क' में संधिशूल में 41.82%, संधिशोथ में 45.33%, संधिराग में 38.24%, संधिस्तंभ में 40.94%, संचारी वेदना में 40.67%, संधि उष्णस्पर्शत्व में 44.82% तथा संधिकार्य हानि में 37.39% उपशय प्राप्त हुआ।

समूह 'ख' में संधिशूल में 58.80%, संधिशोथ में 53.98%, संधिराग में 52.15%, संधिस्तंभ में 51.62%, संचारी वेदना में 60.93%, संधि उष्णस्पर्शत्व में 50.23% तथा संधिकार्य हानि में 48.71% उपशय प्राप्त हुआ।

समूह 'ग' में संधिशूल में 62.50%, संधिशोथ में 65.59%, संधिराग में 66.18%, संधिस्तंभ में 72.41%, संचारी वेदना में 62.38%, संधि उष्णस्पर्शत्व में 65.50% तथा संधिकार्य हानि में 68.39% उपशय प्राप्त हुआ।

तीनों समूहों में आमवात के संधिगत लक्षणों में उपशय प्राप्त हुआ। समूह ग में अन्य दोनों समूह क और समूह ख की अपेक्षाकृत अच्छे परिणाम प्राप्त हुए।

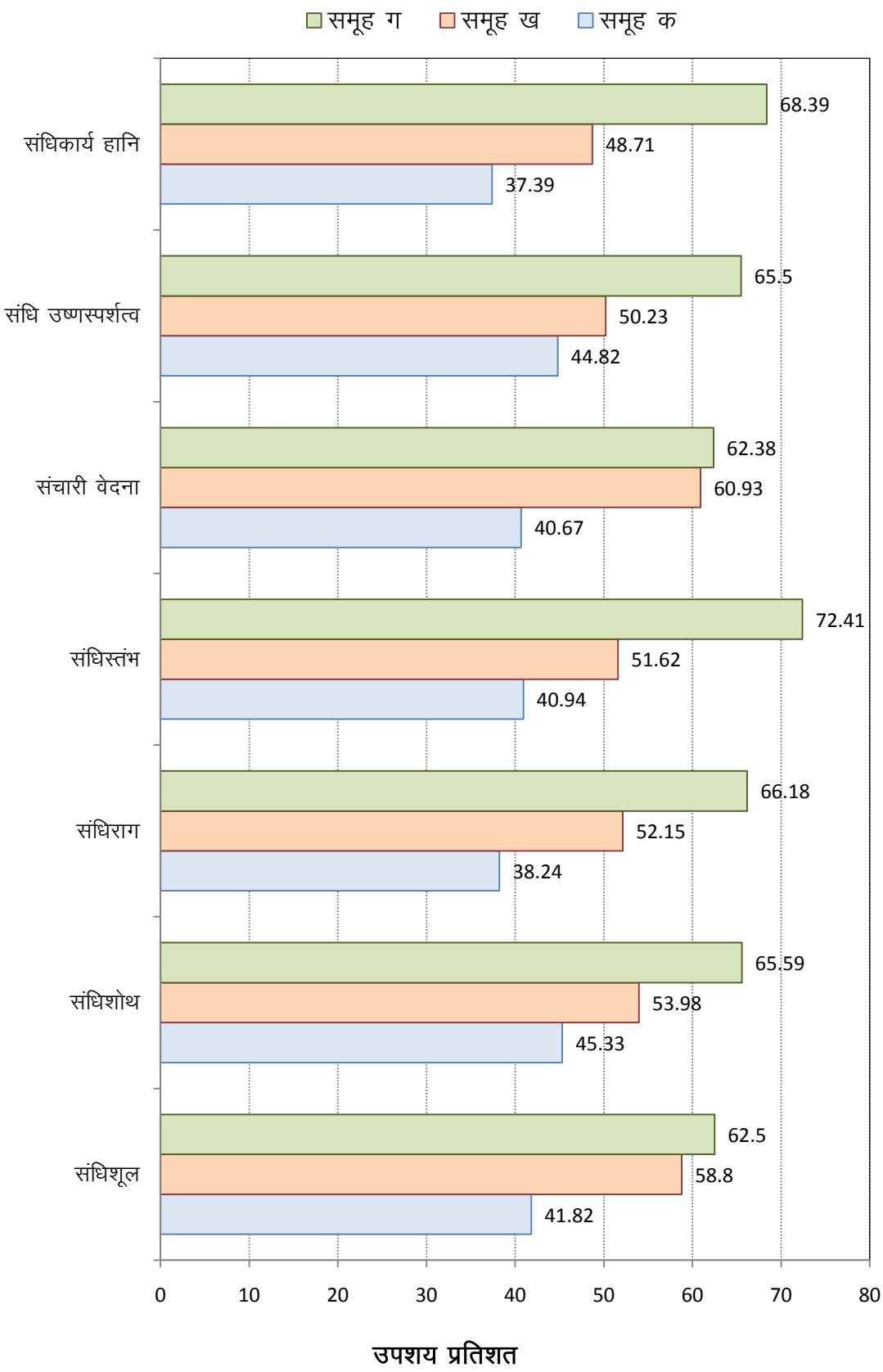
समूह ग
समूह ख
समूह क
संधिकार्य हानि
68.39
48.71
37.39
संधि उष्णस्पर्शत्व
65.5
50.23
44.82
संचारी वेदना
62.38
60.93
40.67
संधिस्तंभ
72.41
51.62
40.94
संधिराग
66.18
52.15
38.24
संधिशोथ
65.59
53.98
45.33
संधिशूल
62.5
58.8
41.82
0
10
20
30
40
50
60
70
80
उपशय प्रतिशत

तालिका क्रमांक २८
आमवात के अन्य सार्वदैहिक लक्षणों में उपशय प्रतिशत दर्शक तालिका

सार्वदेहिक लक्षण	समूह क			समूह ख			समूह ग		
	Mean Score		Relief %	Mean Score		Relief %	Mean Score		Relief %
	BT	AT		BT	AT		BT	AT	
ज्वर	2.00	1.25	37.50	2.00	0.93	53.50	2.00	0.58	71.00
शिरःशूल	2.00	1.33	33.50	2.00	1.00	50.00	2.00	0.70	65.00
निद्रानाश	2.00	1.58	21.00	2.00	1.11	44.50	2.00	0.84	58.00
कण्डू	2.00	1.33	33.50	2.00	1.29	35.5	2.00	0.50	75.00
दाह	2.00	1.11	44.50	2.00	0.88	56.00	2.00	0.86	57.00
स्तेमित्व	2.00	1.33	33.50	2.00	1.00	50.00	2.00	0.80	60.00
बहुमूत्रता	2.00	1.14	43.00	2.00	1.06	47.00	2.00	0.74	63.00
भ्रम	2.00	1.43	28.50	2.00	0.86	57.00	2.00	0.62	69.00
हृदग्रह	2.00	1.17	41.50	2.00	1.14	43.00	2.00	0.67	66.50
अंगग्रह	2.00	1.27	36.50	2.00	1.05	47.50	2.00	0.83	58.50
गौरव	2.00	1.25	37.50	2.00	1.18	41.00	2.00	0.94	53.00
आलस्य	2.00	1.21	39.50	2.00	1.00	50.00	2.00	0.85	57.5
मुखप्रसेक	2.00	1.33	33.50	2.00	1.40	30.00	2.00	0.80	60.00
अरुचि	2.00	1.18	41.00	2.00	1.05	47.50	2.00	0.83	58.50
तृष्णा	2.00	1.13	43.50	2.00	0.93	53.50	2.00	0.83	58.50
क्षुधानाश	2.00	1.12	44.00	2.00	0.86	57.00	2.00	0.67	66.50
छर्दि	2.00	1.14	43.00	2.00	1.20	40.00	2.00	1.00	50.00
आन्त्रकूजन	2.00	1.29	35.50	2.00	1.17	41.50	2.00	0.83	58.50
विबंध	2.00	1.52	24.00	2.00	0.88	56.00	2.00	0.78	61.00
कुक्षिशूल	2.00	1.10	45.00	2.00	0.75	62.50	2.00	0.50	75.00
आनाह	2.00	1.26	37.00	2.00	0.96	52.00	2.00	0.77	61.50
शूनतांग	2.00	1.11	44.50	2.00	0.88	56.00	2.00	0.71	64.50

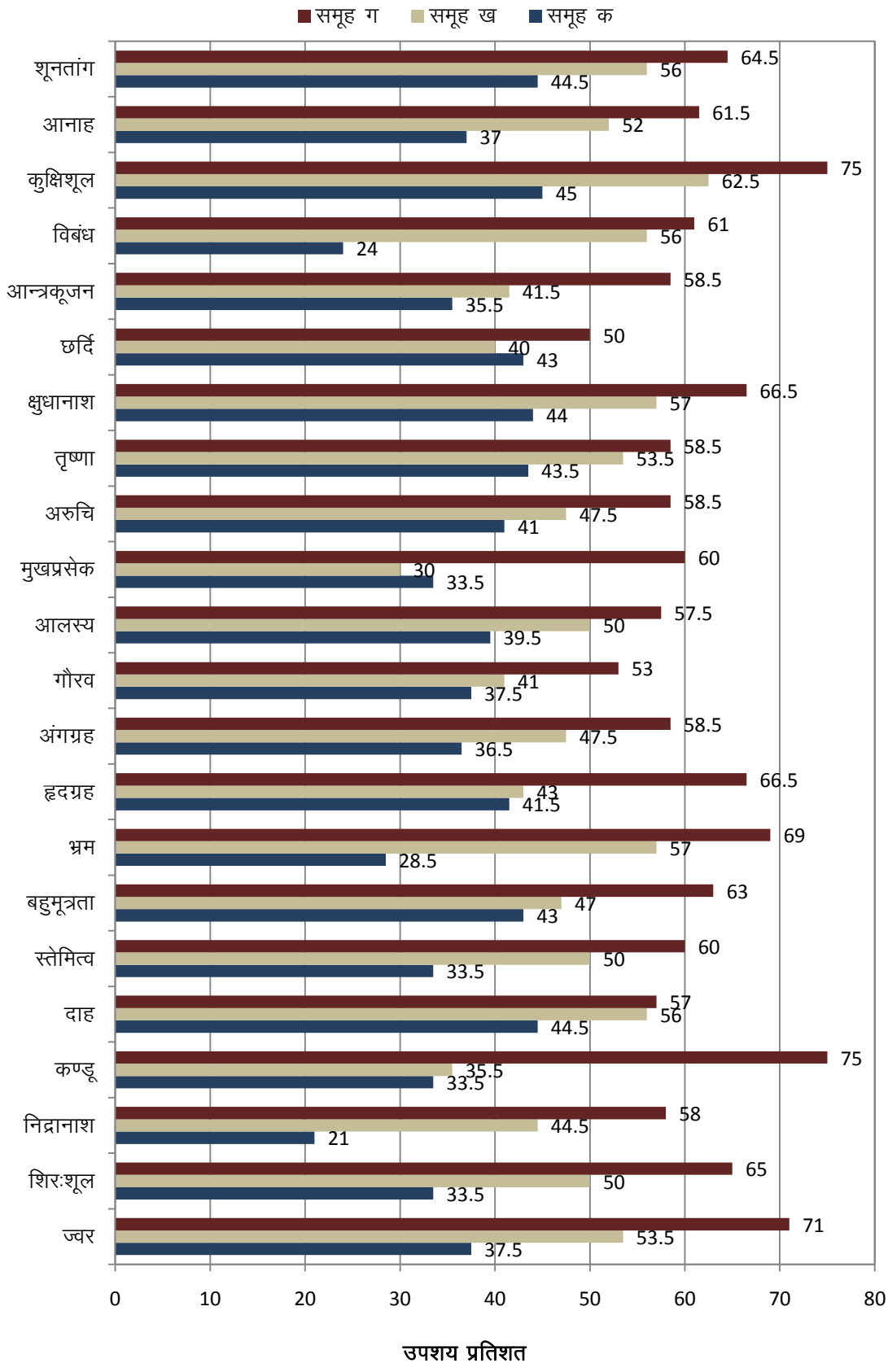
समूह ग
समूह ख
समूह क
शूनतांग 64.5 56 44.5
आनाह 61.5 52 37
कुक्षिशूल 75 62.5 45
विबंध 61 56 24
आन्त्रकूजन 58.5 41.5 35.5
छर्दि 50 40 43
क्षुधानाश 66.5 57 44
तृष्णा 58.5 53.5 43.5
अरुचि 58.5 47.5 41
मुखप्रसेक 60 30 33.5
आलस्य 57.5 50 39.5
गौरव 53 41 37.5
अंगग्रह 58.5 47.5 36.5
हृदग्रह 66.5 43 41.5
भ्रम 69 57 28.5
बहुमूत्रता 63 47 43
स्तेमित्व 60 50 33.5
दाह 57 56 44.5
कण्डू 75 35.5 33.5
निद्रानाश 58 44.5 21
शिरःशूल 65 50 33.5
ज्वर 71 53.5 37.5
0 10 20 30 40 50 60 70 80
उपशय प्रतिशत

सांख्यिकीय अध्ययन

"आमवात के रोगियों पर वृहत सैन्धवादि तैल की जानुबस्ति एवं क्षारवस्ति का चिकित्सकीय अध्ययन" हेतु 90 रोगियों पर 45 दिन तक वृहत सैन्धवादि तैल की जानुवस्ति एवं क्षारवस्ति का चिकित्सकीय अध्ययन किया गया, जिससे प्राप्त लाभ के निर्धारण, सांख्यिकीय आधार हेतु निम्न लक्षणों को लिया गया।

संधिगत – संधिशूल, संधिशोथ, संधिराग, संधिस्तंभ, संचारी वेदना, संधि उष्णस्पर्शत्व, संधिकार्य हानि

सार्वदेहिक – ज्वर, शिरःशूल, निद्रानाश, कण्डू, दाह, स्तेमित्व, बहुमूत्रता, भ्रम, हृदग्रह, अंगग्रह, गौरव, आलस्य, मुखप्रसेक, अरुचि, तृष्णा, क्षुधानाश, छर्दि, आन्त्रकूजन, विबंध, कुक्षिशूल, आनाह, शूनतांग।

इन लक्षणों का चिकित्सापूर्व तथा चिकित्सा पश्चात परीक्षण किया गया। इन लक्षणों में चिकित्सापूर्व और चिकित्सा पश्चात प्राप्त परिणामों को सांख्यिकी रुप में Student 't' test के माध्यम से तालिकाबद्ध कर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

Functional Assessment – Walking Time, Grip strength, Foot pressure & General functional capacity

इसके अतिरिक्त रक्त संबंधी परीक्षा जैसे HB%, TLC, DLC, ESR, RA Factor भी चिकित्सा पूर्व एवं चिकित्सा पश्चात करवाया गया तथा चिकित्सकीय प्रभाव का आंकलन किया गया।

Mean, S.D., S.E., P, Inference are the values after applying the test.

All values are compared with the baseline.

(P Value summary = *)

ns	= P = > 0.05	-	Not Significant
*	= P = < 0.05	-	Significant
**	= P = < 0.01	-	More significant
***	= P = < 0.001	-	Highly significant

तालिका क्रमांक २९
आमवात के संधिगत लक्षणों का सांख्यिकी विश्लेषण

समूह क

लक्षण	'n'	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
संधिशूल	30	2.63	1.53	1.10	41.82	0.31	0.06	7.18	<0.001
संधिशोथ	28	2.36	1.29	1.07	45.33	0.52	0.10	6.92	<0.001
संधिराग	24	2.17	1.33	0.83	38.24	0.56	0.12	5.50	<0.001
संधिस्तंभ	28	2.54	1.50	1.04	40.94	0.19	0.04	7.62	<0.001
संचारी वेदना	22	2.68	1.59	1.09	40.67	0.43	0.09	6.25	<0.001
संधि उष्णस्पर्शत्व	25	2.32	1.28	1.04	44.82	0.35	0.07	6.28	<0.001
संधिकार्य हानि	24	2.46	1.54	0.92	37.39	0.28	0.06	5.40	<0.001

उपरोक्त तालिका समूह 'क' (वृहत सैन्धवादि तैल जानुबस्ति प्रयोग) के अनुसार आमवात से पीड़ित रोगियों में उपस्थित लक्षणों का सांख्यिकीय अध्ययन किया गया। जिसमें संधिशूल, संधिशोथ, संधिराग, संधिस्तंभ, संचारी वेदना, संधि उष्णस्पर्शत्व तथा संधिकार्य हानि इन सभी लक्षणों में महत्वपूर्ण ऱ्हास P<0.001 (Highly significant) प्राप्त हुआ। समूह 'क' में संधिशूल में 41.82%, संधिशोथ में 45.33%, संधिराग में 38.24%, संधिस्तंभ में 40.94%, संचारी वेदना में 40.67%, संधि उष्णस्पर्शत्व में 44.82% तथा संधिकार्य हानि में 37.39% उपशय प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक ३०
आमवात के संधिगत लक्षणों का सांख्यिकी विश्लेषण

समूह ख

लक्षण	'n'	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
संधिशूल	30	2.50	1.03	1.47	58.80	0.51	0.09	10.66	<0.001
संधिशोथ	27	2.26	1.04	1.22	53.98	0.58	0.11	8.06	<0.001
संधिराग	22	2.09	1.00	1.09	52.15	0.68	0.15	6.31	<0.001
संधिस्तंभ	27	2.15	1.04	1.11	51.62	0.32	0.06	7.77	<0.001
संचारी वेदना	26	2.15	0.85	1.31	60.93	0.68	0.13	8.14	<0.001
संधि उष्णस्पर्शत्व	23	2.17	1.09	1.09	50.23	0.42	0.09	6.75	<0.001
संधिकार्य हानि	22	1.95	1.00	0.95	48.71	0.49	0.10	5.70	<0.001

उपरोक्त तालिका समूह 'ख' (क्षारवस्ति प्रयोग) के अनुसार आमवात से पीड़ित रोगियों में उपस्थित लक्षणों का सांख्यिकीय अध्ययन किया गया। जिसमें संधिशूल, संधिशोथ, संधिराग, संधिस्तंभ, संचारी वेदना, संधि उष्णस्पर्शत्व तथा संधिकार्य हानि इन सभी लक्षणों में महत्वपूर्ण ऱ्हास P<0.001 (Highly significant) प्राप्त हुआ। समूह 'ख' में संधिशूल में 58.80%, संधिशोथ में 53.98%, संधिराग में 52.15%, संधिस्तंभ में 51.62%, संचारी वेदना में 60.93%, संधि उष्णस्पर्शत्व में 50.23% तथा संधिकार्य हानि में 48.71% उपशय प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक ३१

आमवात के संधिगत लक्षणों का सांख्यिकी विश्लेषण

समूह ग

लक्षण	'n'	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
संधिशूल	30	2.40	0.90	1.50	62.50	0.51	0.09	12.83	<0.001
संधिशोथ	28	2.18	0.75	1.43	65.59	0.50	0.10	10.75	<0.001
संधिराग	27	2.07	0.70	1.37	66.18	0.56	0.11	9.89	<0.001
संधिस्तंभ	28	2.32	0.64	1.68	72.41	0.48	0.09	10.18	<0.001
संचारी वेदना	27	2.26	0.85	1.41	62.38	0.50	0.10	11.46	<0.001
संधि उष्णस्पर्शत्व	24	2.29	0.79	1.50	65.50	0.51	0.10	10.67	<0.001
संधिकार्य हानि	26	2.31	0.73	1.58	68.39	0.50	0.10	9.31	<0.001

उपरोक्त तालिका समूह 'ग' (वृहत सैन्धवादि तैल जानुबस्ति एवं क्षारवस्ति सम्मिलित प्रयोग) के अनुसार आमवात से पीड़ित रोगियों में उपस्थित लक्षणों का सांख्यिकीय अध्ययन किया गया। जिसमें संधिशूल, संधिशोथ, संधिराग, संधिस्तंभ, संचारी वेदना, संधि उष्णस्पर्शत्व तथा संधिकार्य हानि इन सभी लक्षणों में महत्वपूर्ण ऱ्हास P<0.001 (Highly significant) प्राप्त हुआ।

समूह 'ग' में संधिशूल में 62.50%, संधिशोथ में 65.59%, संधिराग में 66.18%, संधिस्तंभ में 72.41%, संचारी वेदना में 62.38%, संधि उष्णस्पर्शत्व में 65.50% तथा संधिकार्य हानि में 68.39% उपशय प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक ३२
आमवात के अन्य सार्वदेहिक लक्षणों का सांख्यिकी विश्लेषण
समूह क

सार्वदेहिक लक्षण	'n'	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
ज्वर	12	2.00	1.25	0.75	37.50	0.75	0.22	3.45	<0.01
शिरःशूल	06	2.00	1.33	0.67	33.50	0.82	0.33	2.00	<0.01
निद्रानाश	19	2.00	1.58	0.42	21.00	0.69	0.16	2.65	<0.01
कण्डू	03	2.00	1.33	0.67	33.50	0.58	0.33	2.00	>0.05
दाह	09	2.00	1.11	0.89	44.50	0.33	0.11	8.00	<0.001
स्तेमित्व	12	2.00	1.33	0.67	33.50	0.49	0.14	4.69	<0.001
बहुमूत्रता	21	2.00	1.14	0.86	43.00	0.57	0.13	6.85	<0.001
भ्रम	07	2.00	1.43	0.57	28.50	0.53	0.20	2.83	<0.01
हृदग्रह	06	2.00	1.17	0.83	41.50	0.41	0.17	5.00	<0.01
अंगग्रह	22	2.00	1.27	0.73	36.50	0.46	0.10	7.48	<0.001
गौरव	20	2.00	1.25	0.75	37.50	0.44	0.10	7.55	<0.001
आलस्य	19	2.00	1.21	0.79	39.50	0.42	0.10	8.22	<0.001
मुखप्रसेक	06	2.00	1.33	0.67	33.50	0.52	0.21	3.16	<0.01
अरुचि	17	2.00	1.18	0.82	41.00	0.39	0.10	8.64	<0.001
तृष्णा	15	2.00	1.13	0.87	43.50	0.52	0.13	6.50	<0.001
क्षुधानाश	17	2.00	1.12	0.88	44.00	0.49	0.12	7.50	<0.001
छर्दि	07	2.00	1.14	0.86	43.00	0.38	0.14	6.00	<0.001
आन्त्रकूजन	07	2.00	1.29	0.71	35.50	0.49	0.18	3.87	<0.01
विबंध	23	2.00	1.52	0.48	24.00	0.51	0.11	4.49	<0.001
कुक्षिशूल	10	2.00	1.10	0.90	45.00	0.32	0.10	9.00	<0.001
आनाह	23	2.00	1.26	0.74	37.00	0.54	0.11	6.55	<0.001
शूनतांग	09	2.00	1.11	0.89	44.50	0.60	0.20	4.44	<0.001

उपरोक्त तालिका समूह 'क' के अनुसार आमवात से पीड़ित रोगियों में अन्य सार्वदेहिक लक्षणों का सांख्यिकीय अध्ययन किया गया। जिसमें सभी लक्षणों में महत्वपूर्ण ऱ्हास प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक ३३
आमवात के अन्य सार्वदैहिक लक्षणों का सांख्यिकी विश्लेषण
समूह ख

सार्वदेहिक लक्षण	'n'	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
ज्वर	14	2.00	0.93	1.07	53.50	0.47	0.13	8.45	<0.001
शिरःशूल	09	2.00	1.00	1.00	50.00	0.50	0.17	6.00	<0.001
निद्रानाश	18	2.00	1.11	0.89	44.50	0.58	0.14	6.47	<0.001
कण्डू	07	2.00	1.29	0.71	35.5	0.49	0.18	3.87	<0.001
दाह	08	2.00	0.88	1.12	56.00	0.35	0.12	9.200	<0.001
स्तेमित्व	11	2.00	1.00	1.00	50.00	0	0	0.00	<0.001
बहुमूत्रता	18	2.00	1.06	0.94	47.00	0.64	0.15	6.27	<0.001
भ्रम	07	2.00	0.86	1.14	57.00	0.38	0.14	8.00	<0.001
हृदग्रह	07	2.00	1.14	0.86	43.00	0.38	0.14	6.00	<0.001
अंगग्रह	19	2.00	1.05	0.95	47.50	0.52	0.12	7.88	<0.001
गौरव	17	2.00	1.18	0.82	41.00	0.39	0.10	8.64	<0.001
आलस्य	19	2.00	1.00	1.00	50.00	0.53	0.14	9.25	<0.001
मुखप्रसेक	05	2.00	1.40	0.60	30.00	0.55	0.24	2.44	<0.01
अरुचि	20	2.00	1.05	0.95	47.50	0.51	0.11	8.32	<0.001
तृष्णा	14	2.00	0.93	1.07	53.50	0.27	0.07	15.00	<0.001
क्षुधानाश	14	2.00	0.86	1.14	57.00	0.36	0.10	11.78	<0.001
छर्दि	05	2.00	1.20	0.80	40.00	0.45	0.20	4.00	<0.01
आन्त्रकूजन	06	2.00	1.17	0.83	41.50	0.41	0.17	5.00	<0.01
विबंध	25	2.00	0.88	1.12	56.00	0.44	0.09	12.74	<0.001
कुक्षिशूल	08	2.00	0.75	1.25	62.50	0.46	0.16	7.64	<0.001
आनाह	24	2.00	0.96	1.04	52.00	0.55	0.11	9.28	<0.001
शूनतांग	08	2.00	0.88	1.12	56.00	0.35	0.12	9.00	<0.001

उपरोक्त तालिका समूह 'ख' के अनुसार आमवात से पीड़ित रोगियों में अन्य सार्वदेहिक लक्षणों का सांख्यिकीय अध्ययन किया गया। जिसमें सभी लक्षणों में महत्वपूर्ण ऱ्हास प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक ३४
आमवात के अन्य सार्वदेहिक लक्षणों का सांख्यिकी विश्लेषण
समूह ग

सार्वदेहिक लक्षण	'n'	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
ज्वर	12	2.00	0.58	1.42	71.00	0.51	0.15	9.53	<0.001
शिरःशूल	10	2.00	0.70	1.30	65.00	0.48	0.15	8.51	<0.001
निद्रानाश	19	2.00	0.84	1.16	58.00	0.69	0.16	7.33	<0.001
कण्डू	06	2.00	0.50	1.50	75.00	0.55	0.22	6.71	<0.001
दाह	07	2.00	0.86	1.14	57.00	0.38	0.14	8.00	<0.001
स्तेमित्व	10	2.00	0.80	1.20	60.00	0.42	0.13	9.00	<0.001
बहुमूत्रता	19	2.00	0.74	1.26	63.00	0.45	0.10	12.17	<0.001
भ्रम	08	2.00	0.62	1.38	69.00	0.52	0.18	7.51	<0.001
हृदग्रह	06	2.00	0.67	1.33	66.50	0.52	0.21	6.32	<0.001
अंगग्रह	18	2.00	0.83	1.17	58.50	0.38	0.09	12.91	<0.001
गौरव	16	2.00	0.94	1.06	53.00	0.44	0.11	9.60	<0.001
आलस्य	20	2.00	0.85	1.15	57.5	0.49	0.11	10.51	<0.001
मुखप्रसेक	05	2.00	0.80	1.20	60.00	0.45	0.20	6.00	<0.001
अरुचि	18	2.00	0.83	1.17	58.50	0.38	0.09	12.91	<0.001
तृष्णा	12	2.00	0.83	1.17	58.50	0.39	0.11	10.38	<0.001
क्षुधानाश	18	2.00	0.67	1.33	66.50	0.49	0.11	11.66	<0.001
छर्दि	04	2.00	1.00	1.00	50.00	0	0	0	<0.001
आन्त्रकूजन	06	2.00	0.83	1.17	58.50	0.41	0.17	7.00	<0.001
विबंध	23	2.00	0.78	1.22	61.00	0.42	0.09	13.84	<0.001
कुक्षिशूल	08	2.00	0.50	1.50	75.00	0.53	0.19	7.94	<0.001
आनाह	22	2.00	0.77	1.23	61.50	0.43	0.09	13.42	<0.001
शूनतांग	07	2.00	0.71	1.29	64.50	0.49	0.18	6.97	<0.001

उपरोक्त तालिका समूह 'ग' के अनुसार आमवात से पीड़ित रोगियों में अन्य सार्वदेहिक लक्षणों का सांख्यिकीय अध्ययन किया गया। जिसमें सभी लक्षणों में महत्वपूर्ण ऱ्हास प्राप्त हुआ।

तालिका क्रमांक ३५

आमवात के रोगियों में Functional Assessment का सांख्यिकी विश्लेषण

समूह क								
Functional Assessment	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
	BT	AT						
Walking Time	36.80	23.50	13.30	36.14	4.59	0.84	12.56	<0.001
Grip strength	10.13	12.13	-2.00	19.94	1.58	0.29	2.64	<0.01
Foot pressure	72.53	101.13	-28.6	39.43	12.04	2.20	8.39	<0.001
Functional capacity	2.03	1.17	0.87	42.85	0.68	0.12	5.84	<0.001
समूह ख								
Functional Assessment	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
	BT	AT						
Walking Time	40.60	24.00	16.60	40.88	4.26	0.78	14.64	<0.001
Grip strength	12.13	17.57	-5.43	44.76	1.81	0.33	11.54	<0.001
Foot pressure	97.20	138.23	-41.03	42.21	17.16	3.13	11.69	<0.001
Functional capacity	1.97	0.93	1.03	52.28	0.49	0.09	7.91	<0.001
समूह ग								
Functional Assessment	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
	BT	AT						
Walking Time	38.30	18.20	20.10	52.48	4.01	0.73	22.72	<0.001
Grip strength	11.93	19.33	-7.40	62.02	2.71	0.50	14.90	<0.001
Foot pressure	94.23	149.20	-54.97	58.33	15.30	2.79	18.29	<0.001
Functional capacity	2.07	0.83	1.23	59.42	0.57	0.10	9.09	<0.001

उपरोक्त तालिका के अनुसार आमवात से पीड़ित रोगियों में Functional assessment का सांख्यिकीय अध्ययन किया गया। जिसमें Walking time, Grip strength, Foot pressure एवं General functional capacity में तीनों ही समूहों में महत्वपूर्ण ऱ्हास (Significant) प्राप्त हुआ।

समूह 'क' में Walking time में 36.14%, Grip strength में 19.94%, Foot pressure में 39.43% एवं General functional capacity में 42.85% उपशय प्राप्त हुआ। समूह 'ख' में Walking time में 40.88%, Grip strength में 44.76%, Foot pressure में 42.21% एवं General functional capacity में 52.28% उपशय प्राप्त हुआ। समूह 'ग' में Walking time में 52.48%, Grip strength में 62.02%, Foot pressure में 58.33% एवं General functional capacity में 59.42% उपशय प्राप्त हुआ।

आमवात के रोगियों में Functional Assessment का उपशय प्रतिशत

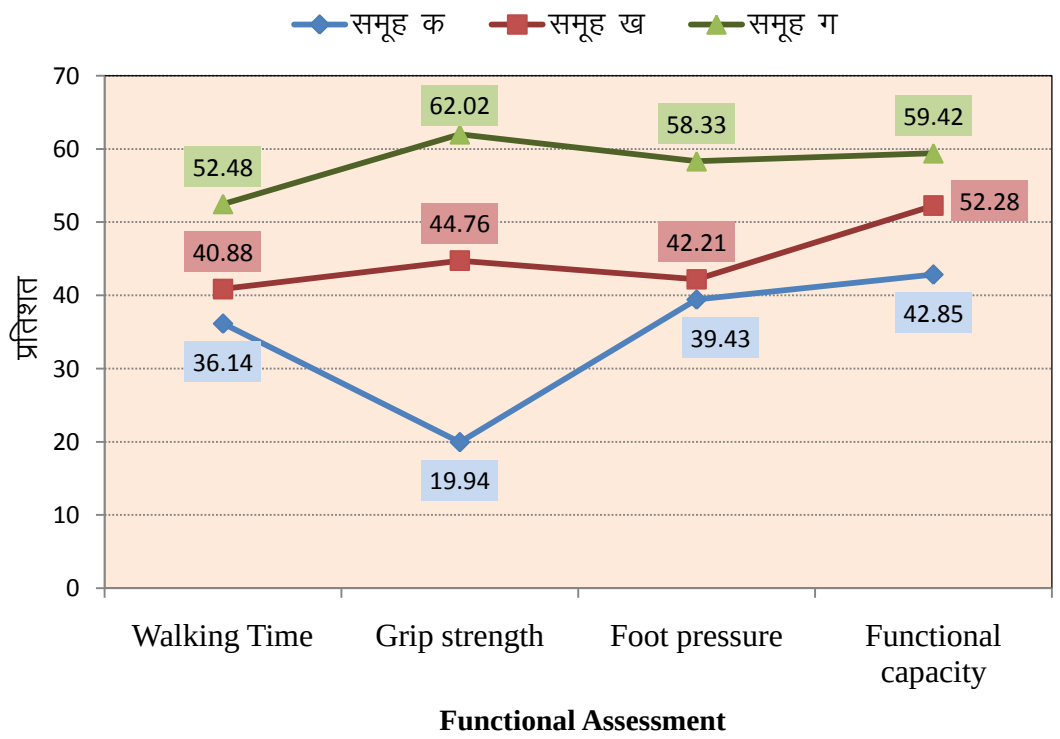

तालिका क्रमांक ३६
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में रक्त परीक्षा दर्शक तालिका

Parameters	समूह	Mean		Mean Diff.	Relief %	SD	SE	't'	P
		BT	AT						
RA Factor	क	1.00	0.82	0.18	18.00	0.39	0.08	2.16	<0.05
	ख	1.00	0.76	0.24	24.00	0.44	0.10	2.50	<0.05
	ग	1.00	0.67	0.33	33.00	0.48	0.10	3.39	<0.001
Hb%	क	12.91	13.45	-0.54	4.18	0.43	0.08	1.64	>0.05
	ख	12.57	13.10	-0.53	4.21	0.36	0.07	1.60	>0.05
	ग	13.21	13.72	-0.52	3.93	0.43	0.08	1.67	>0.05
ESR	क	14.00	8.87	5.13	36.64	2.86	0.52	5.13	<0.001
	ख	15.20	9.50	5.70	37.50	2.90	0.53	5.43	<0.001
	ग	15.87	8.77	7.10	44.73	3.65	0.67	6.82	<0.001
TLC	क	7113	6970	143	2.01	99.7	18.22	0.92	>0.05
	ख	7020	6905	115	1.63	52.7	9.63	0.68	>0.05
	ग	7083	6967	116	1.63	71.1	12.98	0.73	>0.05
Neutrophil	क	58.10	63.67	-5.57	9.58	2.79	0.51	5.27	<0.001
	ख	57.67	62.60	-4.93	8.54	2.63	0.48	4.60	<0.001
	ग	58.87	63.23	-4.37	7.42	2.58	0.47	4.17	<0.001
Lymphocyte	क	34.93	29.23	5.57	15.94	3.02	0.55	5.76	<0.001
	ख	35.33	30.23	5.10	14.43	3.09	0.56	5.05	<0.001
	ग	34.53	29.80	4.73	13.69	2.90	0.53	4.61	<0.001
Eosinophil	क	4.40	5.23	-0.83	18.86	1.02	0.19	3.53	<0.001
	ख	4.43	5.30	-0.87	19.63	1.01	0.18	3.78	<0.001
	ग	4.13	5.23	-1.10	26.63	1.03	0.19	4.16	<0.001
Monocyte	क	2.57	1.87	0.70	27.23	0.53	0.10	3.99	<0.001
	ख	2.47	1.77	0.70	28.34	0.60	0.11	4.32	<0.001
	ग	2.47	1.63	0.83	33.60	0.53	0.10	5.19	<0.001

आमवात से पीड़ित रोगियों के तीनों समूह में रक्त संबन्धित परीक्षण किये गये, जिसमें RA Factor चिकित्सापूर्व समूह क, समूह ख और समूह ग में क्रमशः 22, 21 एवं 24

रोगियों में Positive पाया गया। चिकित्सा पश्चात समूह क में 18% , समूह ख में 24% तथा समूह ग में 33% रोगियों में RA Factor Negative पाया गया। सभी समूहों में RA Factor में महत्वपूर्ण ऱ्हास दिखाई दिया। तीनों समूहों में Hb% में आधे ग्रॉम की वृद्धि प्राप्त हुई। ESR परीक्षा में तीनों समूहों में महत्वपूर्ण ऱ्हास दिखाई दिया। TLC value तीनों समूहों में कम हुई पर सांख्यिकीय दुष्टिकोण से P>0.05 (Not significant) दिखाई दिया। Neutrophil और Eosinophil में वृद्धि तथा Lymphocyte और Monocyte value में कमी प्राप्त हुई, सांख्यिकीय दुष्टिकोण से तीनों समूहों में परिणाम Significant रहा।

आमवात व्याधि से पीड़ित रोगियों में RA Factor परीक्षण में उपशय प्रतिशत

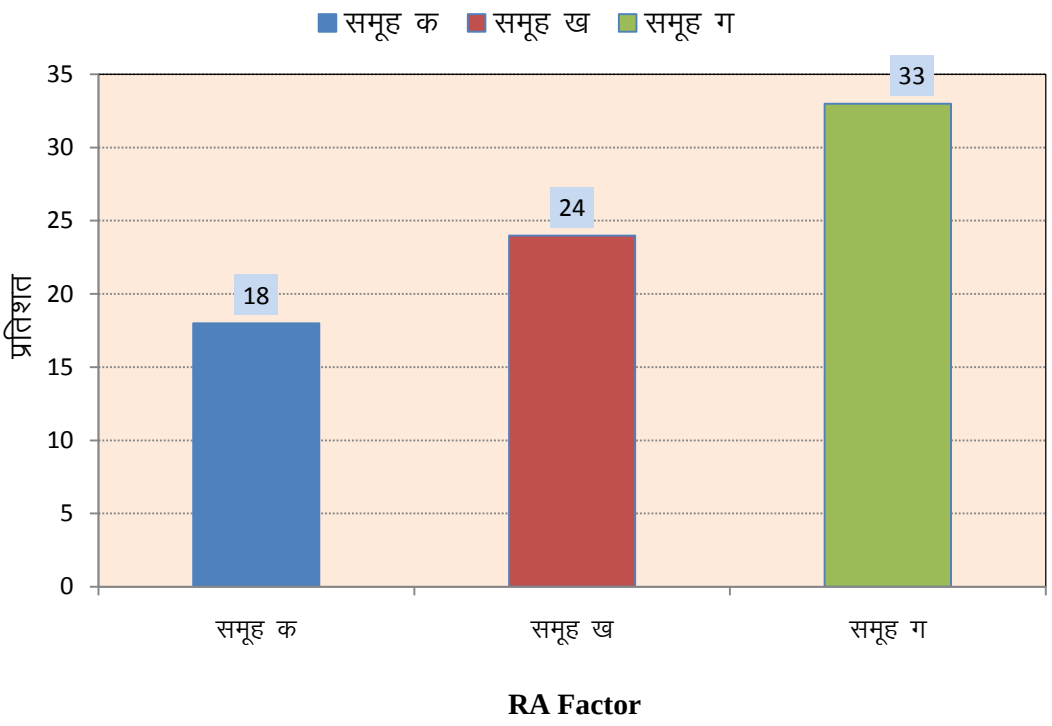

तालिका क्रमांक ३७
आमवात व्याधि से पीड़ित ९० रोगियों में चिकित्सा के सम्पूर्ण प्रभाव का अध्ययन

लाभ	समूह क		समूह ख		समूह ग	
	रोगी संख्या	प्रतिशत	रोगी संख्या	प्रतिशत	रोगी संख्या	प्रतिशत
सम्पूर्ण लाभ	0	0	02	6.67	02	6.67
उत्तम लाभ	0	0	02	6.67	05	16.67
मध्यम लाभ	03	10	11	36.66	23	76.66
अल्प लाभ	27	90	15	50	0	0
कोई लाभ नहीं	0	0	0	0	0	0
कुल	30	100	30	100	30	100

आमवात से पीड़ित 90 रोगियों में चिकित्सा के सम्पूर्ण प्रभाव के परिणाम आकलन हेतु उपशय प्रतिशत निकाला गया। यह उपशय प्रतिशत लाक्षणिक तथा अन्य परीक्षणों के आधार पर निकाला गया। जिसमे – समूह 'क' में मध्यम लाभ 03 (10%) एवं अल्प लाभ 27 (90%) रोगियों में प्राप्त हुआ। समूह 'ख' में सम्पूर्ण लाभ 02 (6.67%), उत्तम लाभ 02 (6.67%), मध्यम लाभ 11 (36.66%) तथा अल्प लाभ 15 (50%) रोगियों में प्राप्त हुआ। समूह 'ग' में सम्पूर्ण लाभ 02 (6.67%), उत्तम लाभ 05 (16.67%) तथा मध्यम लाभ 23 (76.66%) रोगियों में प्राप्त हुआ।